अमर उजाला, चरखी दादरी 05.10.2022

राजकीय महाविद्यालय में वीरांगना भिकाजी रुस्तम कामा को किया याद

राजकीय महाविद्यालय में कार्यक्रम में संबोधित करते वक्ता डॉ. अमरदीप। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य ने आयोजन की अध्यक्षता की। इस दौरान महान स्वतंत्रता सेनानी एवं वीरांगना भिकाजी रुस्तम कामा की 161वीं जयंती मनाई गई। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि भिकाजी कामा पहली भारतीय महिला थी जिन्होंने विदेश में भारतीय ध्वज लहराकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आजादी की आवाज बुलंद की थी।

भिकाजी कामा ने साम्राज्यवाद को नष्ट करने और भारत की आजादी के लिए संघर्ष करने के लिए सभी देशों से जोरदार आह्वान किया। कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र और अजय सिंह उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 08.10.2022

अमृत महोत्सव के तहत वीरांगना भिकाजी रुस्तम कामा को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं वीरांगना भिकाजी रुस्तम कामा की 161 वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि भिकाजी कामा पहली भारतीय महिला थी जिन्होंने विदेश में भारतीय तिरंगा लहराकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आजादी की आवाज बुलंद की थी। यह घटना 1907 के जर्मनी के शहर स्टुटगार्ट में इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस के आयोजन के दौरान की थी जिसमे दुनियाभर से एक हजार से ज्यादा भाग ले रहे थे और सभी के झंडे लगे हुए थे। परंतु भारत का कोई भी झंडा नहीं था। जिसे देखते ही भिकाजी कामा ने विरोध किया और स्वयं तिरंगा बनाया जिसमें हरे, पीले और लाल रंग की तीन पट्टियां थीं और बीच वाली पट्टी पर वंदे मातरम लिखा था। ऐसी महान वीरांगना भिकाजी कामा का जन्म मुम्बई में 1861 को हुआ था। 1896 में मुम्बई में भयंकर प्लेग फैला और लोगों को संकट में देख भीकाजी खुद नर्स के रूप में सेवा देने लगीं और बाद में दुर्भाग्यवश वो खुद इसकी शिकार बन गई। बाद में उन्हें बेहतर इलाज के लिए लंदन जाना पड़ा। इलाज होने पर उन्होंने लंदन में महान सेनानी दादा भाई नौरोजी एवं श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, वीडी सावरकर इत्यादि जैसे क्रांतिकारियों से मिलकर भारत की आज़ादी का बिगुल बजाना शुरू किया और युवाओं को भारत को आज़ादी के लिए आगे आने के लिए प्रेरित किया।

161. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 175th Birth Anniversary of great freedom fighter Annie Besant on 06.10.2022 and delivered keynote address on “Home Rule Movement and Contribution of Annie Besant.”

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 07-10-2022

आजादी अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

महान स्वतंत्रता सेनानी ऐनी बीसेंट की 175वीं जयंती मनाई

भास्कर न्यूज | झज्जर

विचार व्यक्त करते डॉक्टर अमरजीत सिंह।

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी ऐनी बीसेंट की 175वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि ऐनी बीसेंट एक महान समाजसेवी, महिला अधिकारों की पुरोधा और होमरूल आन्दोलन की प्रवर्तक थी। लन्दन शहर में 1847 में जन्मीं ऐनी बीसेंट 1893 में भारत आई और उसके बाद यही बस गई। भारतीय रीति रिवाज और धर्म से प्रभावित होकर वह थियोसोफिकल सोसाइटी से जुड़ गई। उन्होंने पाश्चात्य भौतिकवादी सभ्यता की कड़ी निंदा करते हुए प्राचीन हिन्दू सभ्यता की श्रेष्ठता को मानने का आह्वान किया। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि भारत के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता आवश्यक है इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने 1916 में बाल गंगाधर तिलक के साथ मिलकर 'होमरूल आन्दोलन' प्रारंभ किया। डॉ. अमरदीप ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में होमरूल लीग आन्दोलन का महत्वपूर्ण स्थान है। इस आन्दोलन ने 1907 के बाद कांग्रेस विभाजन के पश्चात कमजोर हुए स्वतंत्रता आन्दोलन में नई जान फूंकी थी। एक बार फिर भारतीय जनता फिर से स्वराज के लिए सड़कों पर उतरती है और राष्ट्रीय जागरूकता फिर से उफान पर आती है। शिक्षा को बदलाव का बड़ा साधन मानते हुए ऐनी बीसेंट और मदनमोहन मालवीय ने 1911 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय प्रारम्भ करने के लिए एक बड़ा आन्दोलन चलाना प्रारम्भ किया जो 1916 में इस विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ सफल रहा।

अमर उजाला, झज्जर 07.10.2022

होम रूल आंदोलन की प्रवर्तक और समाजसेवी थीं ऐनी बेसेंट

स्वतंत्रता सेनानी को जयंती पर बिरोहड़ कॉलेज में किया गया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणबीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ। जिसमें महान स्वतंत्रता सेनानी ऐनी बेसेंट की 175 वीं जयंती के अवसर पर व्याख्यान करवाया गया।

बिरोहड़ कॉलेज में ऐनी बेसेंट की जयंती पर व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि ऐनी बेसेंट एक महान समाजसेवी, महिला अधिकारों की पुरोधा और होमरूल आंदोलन की प्रवर्तक थीं। लंदन शहर में 1847 में जन्मी ऐनी बेसेंट 1893 में भारत आईं और उसके बाद यहीं बस गईं। भारतीय रीति रिवाज और धर्म से प्रभावित होकर वह थियोसोफिकल सोसाइटी से जुड़ गईं। उन्होंने पाश्चात्य भौतिकवादी सभ्यता की कड़ी निंदा करते हुए प्राचीन हिंदू सभ्यता की श्रेष्ठता को मानने का आह्वान किया। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि भारत के लिये राजनीतिक स्वतंत्रता आवश्यक है इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उन्होंने 1916 में बाल गंगाधर तिलक के साथ मिलकर होमरूल आंदोलन प्रारंभ किया।

डॉ. अमरदीप ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में होमरूल लीग आंदोलन का महत्वपूर्ण स्थान है। इस आंदोलन ने 1907 के बाद कांग्रेस विभाजन के पश्चात कमजोर हुए स्वतंत्रता आंदोलन में नई जान फूंकी थी। एक बार फिर भारतीय जनता फिर से स्वराज के लिए सड़कों पर उतरती है और राष्ट्रीय जागरूकता फिर से उफान पर आती है। महाविद्यालय की प्रशासनिक इंचार्ज डॉ. अनीता रानी ने कहा कि ऐनी बेसेंट ने भारतीय समाज में फैली बुराइयों का विरोध करते हुए महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा को सर्वोपरि मानते हुए समाज में बदलाव की मुहिम शुरू की। शिक्षा को बदलाव का बड़ा साधन मानते हुए ऐनी बेसेंट और मदनमोहन मालवीय ने 1911 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय प्रारंभ करने के लिए एक बड़ा आंदोलन चलाया जो 1916 में इस विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ सफल रहा।

162. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 115th Birth Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Durga Bhabhi on 07.10.2022 and delivered keynote address on “Durga Bhabhi: A Unforgotten Hero of Revolutionary Movement”.”

अमर उजाला, झज्जर 08.10.2022

दुर्गा भाभी ने बम बनाना सीखा, डंके की चोट पर अंग्रेजों से ली थी टक्कर

जयंती : भगत सिंह और उनके साथियों की जमानत के लिए बेच दिए थे अपने गहने

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग द्वारा प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। महान क्रांतिकारी वीरांगना दुर्गा भाभी की 115वीं जयंती के अवसर पर व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम के संयोजक एवं विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि महिला शक्ति की प्रतीक दुर्गावती देवी का जन्म सात अक्तूबर 1907 में गांव शहजादपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। बचपन में मां की मृत्यु और पिता द्वारा सन्यास लेने पर इनकी बुआ ने दुर्गा का पालन पोषण किया। 1918 में महान क्रांतिकारी भगवती चरण वोहरा के साथ विवाह होने पर दुर्गावती क्रांतिकारी आंदोलन में कूद पड़ीं। भगवती चरण सभी क्रांतिकारियों में बड़ा होने पर दुर्गावती को दुर्गा भाभी के नाम से पुकारा जाने लगा। सबसे पहले महात्मा गांधी द्वारा चलाये असहयोग आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में दुर्गा भाभी की जयंती पर व्याख्यान देते विशेषज्ञ। संवाद

परंतु चौरीचौरा की घटना के बाद महात्मा गांधी ने आंदोलन वापिस ले लिया और जिसका विरोध करने वाली में दुर्गावती सबसे आगे थी। अब वह भगत सिंह, सुखदेव इत्यादि के साथ मिलकर क्रांतिपथ पर चल पड़ीं और भारत नौजवान सभा की स्थापना की और पहला कार्यक्रम करतार सिंह सराभा की शहादत के अवसर पर आयोजित किया गया। शहीद की प्रतिमा की नीचे खद्दर की चादर बिछाई गई थी उसे सभी क्रांतिकारियों ने अपनी-अपनी उंगलियां काटकर खून से रंगा था, जो उनमें क्रांतिपथ की धधकती ज्वाला का प्रतिक थी। डॉ. अमरदीप ने कहा कि अगर दुर्गा भाभी नहीं होतीं तो शायद 1928 में भगत सिंह, राजगुरु सांडर्स की हत्या के बाद लाहौर नहीं छोड़ पाते। उनको इस विपदा से बचाने के लिए दुर्गा भाभी भगत सिंह की पत्नी बनी और राजगुरु उनका नौकर बना तब लाहौर रेलवे स्टेशन भारी पुलिस बंदोबस्त के बावजूद उनको बचाते हुए वह कलकत्ता तक ले गईं। 1929 में भगत सिंह द्वारा केंद्रीय एसेंबली बम विस्फोट मामले में पकड़े जाने पर वह जेल के सामने एक कोठी किराए पर लेकर रहने लगीं और बम बनाना सीखना शुरू किया। ताकि भगत सिंह और अन्य क्रांतिकारियों को जेल से छुड़ा सकें, परंतु एक दिन बम फट गया और इस ठिकाने का अंग्रेजों को पता चल गया था। उसके बाद दुर्गा भाभी ने पंजाब में लॉर्ड हैली की हत्या करने का प्रयास किया था। हालांकि वह बच गया था। दुर्गा भाभी ने भगत सिंह और उनके साथियों की जमानत के लिए एक बार अपने गहने तक बेच दिए थे। प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह ने कहा कि दुर्गा भाभी ने भारत की आजादी के लिए बम बनाना सीखा और भारत की नारी कितनी शक्तिशाली और निडर है, प्रशासनिक इंचार्ज डॉ. अनीता रानी ने कहा कि दुर्गा भाभी युवाओं और विशेषकर छात्राओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं जो उन्हें अदम्य साहस और अद्वितीय ऊर्जावान बनने का संदेश देता है। आयोजन में इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र और अजय सिंह का विशेष योगदान रहा।

अमर उजाला, चरखी दादरी 08.10.2022

कार्यक्रम बिरोहड़ महाविद्यालय में क्रांतिकारी वीरांगना दुर्गावती देवी की जयंती पर दी जानकारी

'दुर्गा भाभी ने ब्रिटिश हुकूमत से ली थी टक्कर'

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान क्रांतिकारी वीरांगना दुर्गा भाभी की 115वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि महिला शक्ति की प्रतीक दुर्गावती देवी का जन्म सात अक्तूबर 1907 में उत्तर-प्रदेश के गांव शहजादपुर में हुआ था। बचपन में मां की मृत्यु होने और पिता द्वारा सन्यास लेने पर उनकी बुआ ने दुर्गा का पालन पोषण किया।

डॉ. अमरदीप ने बताया कि 1918 में महान क्रांतिकारी भगवती चरण वोहराके साथ विवाह होने पर दुर्गावती क्रांतिकारी आंदोलन में कूद पड़ी। महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया लेकिन चोरा-चोरी की घटना के बाद महात्मा गांधी ने आंदोलन वापस ले लिया। दुर्गा ने भगत सिंह, सुखदेव के साथ क्रांतिपथ अपनाया और भारत नौजवान सभा की स्थापना की। दुर्गा भाभी ने भगत सिंह और उनके साथियों की जमानत के लिए एक बार अपने गहने तक बेच दिए थे। कार्यक्रम के संरक्षक एवं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह ने कहा कि दुर्गा भाभी ने भारत की आजादी के लिए बम बनाना सीखा था। कार्यक्रम को सफल बनाने में इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र व अजय सिंह का योगदान रहा।

गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय कॉलेज में छात्राओं को संबोधित करते वक्ता। संवाद

163. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 43rd Death Anniversary of great freedom fighter Jayaprakash Narayan on 09.10.2022 and delivered keynote address on “Role of J. P. Narayan in Freedom Struggle and Making of Modern India.”

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 09.10.2022

एक निष्ठावान राष्ट्रवादी थे स्वतंत्रता सेनानी जयप्रकाश नारायण

चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण की 43 वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य ने की। इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि जयप्रकाश नारायण एक निष्ठावान राष्ट्रवादी थे। 1902 में बिहार में जन्में जयप्रकाश ने जलियांवाला बाग नरसंहार का विरोध करते हुए ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली को छोड़कर बिहार विद्यापीठ में प्रवेश लिया। 1922 में जयप्रकाश ने अमेरिका में बर्कली विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और 1929 में भारत लौटने से पहले वह मार्क्सवादी विचारधारा को अपना लिया था। जय प्रकाश मानते थे कि भारत में समाजवाद की स्थापना से ही वास्तविक आज़ादी आएगी। समाजवादी आंदोलन को मजबूत बनाने के लिए उन्होंने 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जय प्रकाश नारायण ने अविस्मरणीय भूमिका निभाई। क्रांतिकारी कांग्रेस रेडियो पर उन्होंने संबोधनों से जनता में आंदोलन के प्रति अदम्य जोश बनाए रखा। कार्यक्रम के संरक्षक और महाविद्यालय प्राचार्य डा. रणवीर सिंह ने कहा कि आज़ादी के बाद जयप्रकाश नारायण ने आचार्य नरेंद्र देव के साथ मिलकर 1948 में आल इंडिया कांग्रेस सोशलिस्ट की स्थापना की। बाद में चुनावी राजनीति से अलग होकर भूमि सुधार के लिए विनोबा भावे के भूदान आंदोलन से जुड़ गए। आठ अक्टूबर 1979 में यह योद्धा चिरनिंद्रा में विलीन हो गए। (जासं)

दैनिक भास्कर — झज्जर भास्कर 09-10-2022

जयप्रकाश नारायण की 43वीं पुण्यतिथि मनाई

झज्जर | आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम हुआ। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी और समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण की 43वीं पुण्यतिथि मनाई। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि जयप्रकाश नारायण एक निष्ठावान राष्ट्रवादी थे और उन्होंने राष्ट्र को हमेशा सर्वोपरी माना। 1902 में बिहार में जन्में जयप्रकाश ने जलियांवाला बाग नरसंहार का विरोध करते हुए ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली को छोड़कर बिहार विद्यापीठ में प्रवेश लिया। 1922 में अमेरिका में बर्कली विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और 1929 में भारत लौटने से पहले वह मार्क्सवादी विचारधारा को अपना लिया था। 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में कूद पड़े और 1932 में उन्हें पहली बार एक वर्ष की कैद हुई। उन्होंने 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। द्वितीय विश्व युद्ध में ग्रेट ब्रिटेन के पक्ष में भारत की भागीदारी का विरोध करने के कारण 1939 में जयप्रकाश को फिर से गिरफ्तार कर लिया गया।

164. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special tree plantation drive on 16th Mahaparinirvan Diwas of great social reformer Mahashya Kanshi Ram on 10.10.2022 and delivered a keynote address on “The Ideology of Kanshi Ram and Salvation of Dalits in India.”

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 11-10-2022

समाज सुधारक कांशीराम के 16वें महा परिनिर्वाण दिवस पर पौधरोपण किया

भास्कर न्यूज | झज्जर

कांशीराम के 16वें महा परिनिर्वाण दिवस पर पौधरोपण करते हुए।

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में समाज सुधारक कांशीराम के 16वें महा परिनिर्वाण दिवस पर विशेष पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, डॉ. नरेंद्र सिंह, जितेन्द्र और पवन कुमार द्वारा पौधरोपण किया गया। इस विशेष कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि मान्यवर साहब कांशी राम सामाजिक एकता के पुरोधा थे। उन्होंने आधुनिक भारत में समतामूलक समाज की स्थापना की नींव रखी। 1947 में एक लम्बे स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात भारत की राजनीतिक आजादी सुनिश्चित हुई परंतु सामाजिक रूप से कई बुराइयां व्याप्त रही और भारत की बड़ी जनसंख्या सामाजिक असमानता एवं भेदभाव से पीड़ित रही। इस भेदभाव को समाप्त करने और उपेक्षित समुदायों में जाग्रति फैलाने का कार्य में मान्यवर साहब कांशीराम ने बड़ी भूमिका अदा की।

165. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special National Seminar on 86th Birth Anniversary of great Historian of Modern India and Haryana Professor K.C. Yadav on 11.10.2022 and delivered keynote address was delivered by Dr. Karmvir, Asst. Prof. in History, S.K. Govt. College, Kanwali (Rewari), under Presidentship of Dr. Ashutosh Kumar, Associate Professor in History, Banares Hindu University, Varansi, Uttar Pradesh.

अमर उजाला, झज्जर 12.10.2022

प्रो. यादव ने हरियाणा के इतिहास लेखन में स्थापित किए नए प्रतिमान

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहासकार प्रो. केसी यादव के जन्मदिन पर हुआ राष्ट्रीय सेमिनार

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग द्वारा प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ। सुप्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति में उनके 86वें जन्मदिन के अवसर पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि प्रो. केसी यादव के व्यक्तित्व और कृतित्व की स्मृति में यह द्वितीय मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया। प्रो. यादव ने हरियाणा के इतिहास लेखन में नये प्रतिमान स्थापित किए और हरियाणा का बुनियादी इतिहास लिखने का कार्य किया। प्रोफेसर केसी यादव का जन्म 11 अक्तूबर 1936 को वर्तमान रेवाड़ी जिले के नाहड़ ग्राम के एक साधारण किसान परिवार में हुआ। सेमिनार के मुख्य वक्ता डॉ. कर्मवीर, इतिहास प्रोफेसर, श्री कृष्णा राजकीय महाविद्यालय, कंवाली, ने कहा कि प्रोफेसर केसी यादव ने क्षेत्रीय इतिहास की परंपरा को नया रूप देते हुए हरियाणा के इतिहास लेखन की अद्भुत परंपरा प्रारंभ की। आधुनिक काल तक 2 भागों में लिखा। इसके साथ साथ उन्होंने आर्य समाज, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय, सर छोटूराम, 1857 की क्रांति, मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर इत्यादि पर विस्तृत शोध किया।

प्रो. केसी यादव की स्मृति में राष्ट्रीय सेमिनार को संबोधित करते वक्ता। संवाद

मेरठ नहीं, अंबाला से शुरू हुई थी 1857 की क्रांति

सेमिनार के अध्यक्ष बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी से इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. आशुतोष कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्रोफेसर यादव पहले इतिहासकार थे जिन्होंने स्थापित किया कि 1857 की क्रांति मेरठ से नहीं बल्कि अंबाला से शुरू हुई थी। उन्होंने प्रोफेसर केसी यादव ने अपने अंतिम शोध मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के रंगून मुकदमे पर चर्चा करते हुए कहा कि प्रोफेसर यादव का यह शोध भारतीय इतिहास लेखन में नए आयाम स्थापित करते हुए ब्रिटिश हुकूमत को कटघरे में खड़ा करता हुआ नजर आएगा।

हरियाणवियों ने रखी थी ब्रिटिश विजय की नींव

सेमिनार के रिसोर्स पर्सन एवं सैनिक इतिहासकार डॉ. नरेंद्र यादव ने कहा कि प्रो. केसी यादव ने हरियाणा के सैनिकों के प्रथम विश्व युद्ध में विशेष योगदान पर शोध करके साबित किया था कि इस युद्ध में ब्रिटिश विजय की नींव रखने वाले हरियाणा, विशेष रूप से रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, फरीदाबाद इत्यादि के सैनिक थे। जिन्होंने विदेशी जमीन पर जीत करके यूरोपीय विजेता नस्लवादी मिथक को तोड़ा था। सेमिनार की समन्वयक डॉ. अनीता रानी ने कहा कि इस सेमिनार के द्वारा प्रोफेसर केसी यादव की देन को आगे बढ़ाने में सहायता मिलेगी और इतिहास लेखन में उनकी परंपरा पुनर्जीवित होगी। राष्ट्रीय सेमिनार के संरक्षक डॉ. रणवीर सिंह आर्य ने कहा कि इस सेमिनार से प्रोफेसर यादव की इतिहास लेखन परंपरा नये शोधार्थियों में परिलक्षित होती हुई नजर आ रही है, और क्षेत्रीय इतिहास को और अधिक समृद्ध करने के प्रयास किए जाएंगे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 12.10.2022

केसी यादव ने संस्कृति को किया पुनर्जीवित

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डा. रणबीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में सुप्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार प्रो. केसी यादव की स्मृति में उनके 86वें जन्मदिन के अवसर पर एक राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया।

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में प्रोफेसर केसी यादव के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

सेमीनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि प्रो. केसी यादव के व्यक्तित्व और कृतित्व की स्मृति में यह द्वितीय मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया। डा. अमरदीप ने कहा कि प्रो. केसी यादव ने हरियाणा के इतिहास लेखन में नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। प्रो. यादव का जन्म 11 अक्टूबर 1936 को वर्तमान रेवाड़ी जिले के नाहड़ ग्राम के एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। कार्यक्रम के गेस्ट आफ आनर के रूप में दिवंगत प्रो. केसी यादव की पत्नी शशि प्रिया यादव उपस्थित रहीं। सेमिनार के मुख्य वक्ता डा. कर्मवीर, इतिहास प्रोफेसर, कृष्णा राजकीय महाविद्यालय, कंवाली ने कहा कि प्रो. केसी यादव ने क्षेत्रीय इतिहास की परंपरा को नया रूप देते हुए हरियाणा के इतिहास लेखन की अद्भुत परंपरा प्रारंभ की। जब हरियाणा का 1966 में गठन हुआ तब विद्यार्थियों को हरियाणा का इतिहास पढ़ने की सबसे ज्यादा दिक्कत आई। तब इस कमी को पूरा करने का बीड़ा प्रो. केसी यादव ने उठाया और उन्होंने हरियाणा का राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक दो भागों में लिखा। अंग्रेजी विभागाध्यक्ष और सेमिनार के सह संयोजक डा. सुरेंद्र सिंह ने केसी यादव के इतिहास लेखन एवं शोध के क्षेत्र में किए गए उनके अथक कार्य एवं लेखन को सच्ची श्रद्धांजलि बताया। राष्ट्रीय सेमिनार को सफल बनाने में प्रो. केसी यादव के पुत्र नितिन, पुत्री नलिनी एवं बिरोहड़ महाविद्यालय से डा. सुरेंद्र सिंह, डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, जितेंद्र, डा. अजय कुमार, अजय सिंह, डा. राजपाल सिंह इत्यादि ने योगदान दिया।

अमर उजाला, चरखी दादरी 12.10.2022

'प्रो. केसी यादव ने क्षेत्रीय इतिहास लेखन परंपरा में दिया अद्वितीय योगदान'

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय इतिहासकार प्रो. केसी यादव की स्मृति में उनके 86वें जन्मदिन पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि प्रो. केसी यादव ने क्षेत्रीय इतिहास लेखन परंपरा में अद्वितीय योगदान दिया । प्रो. केसी यादव का जन्म 11 अक्तूबर 1936 को वर्तमान रेवाड़ी जिले के नाहड़ गांव के एक किसान परिवार में हुआ । कार्यक्रम में गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में दिवंगत प्रोफेसर केसी यादव की पत्नी शशि प्रभा यादव उपस्थित रही। सेमिनार के मुख्य वक्ता डॉ. कर्मवीर ने भी विचार रखे।

सेमिनार में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. आशुतोष कुमार ने कहा कि प्रोफेसर यादव पहले इतिहासकार थे जिन्होंने स्थापित किया कि 1857 की क्रांति मेरठ से नहीं बल्कि अंबाला से शुरू हुई थी। संवाद

दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़ 13.10.2022

इतिहासकार यादव की स्मृति में सेमिनार

झज्जर, 12 अक्तूबर (हप्र)

अमृत महोत्सव शृंखला के तहत झज्जर जिले के गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में सुप्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार केसी यादव की स्मृति में उनके जन्मदिवस पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। प्राचार्य डा.रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में आयोजित किए गए इस सेमिनार में अनेक बुद्धिजीवियों व शिक्षाविद ने भाग लिया। सभी ने अपने सम्बोधन में केसी यादव को हरियाणा का गौरव बताया। सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने प्रोफेसर के सी यादव के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि केसी यादव ने हरियाणा के इतिहास लेखन में नये प्रतिमान स्थापित किये और हरियाणा का बुनियादी इतिहास लिखने का कार्य प्रोफेसर यादव की तरफ से किया गया। कार्यक्रम के गेस्ट ऑनर के रूप में दिवंगत प्रोफेसर केसी यादव की पत्नी श्रीमती शशि प्रिया यादव उपस्थित रहीं। सेमिनार के मुख्य वक्ता डा. कर्मवीर, इतिहास प्रोफेसर, श्री कृष्णा राजकीय महाविद्यालय, कंवाली ने कहा कि प्रोफेसर केसी यादव ने क्षेत्रीय इतिहास की परम्परा को नया रूप देते हुए हरियाणा के इतिहास लेखन की अद्भुत परम्परा प्रारम्भ की। सेमिनार को सफल बनाने में प्रोफेसर केसी यादव के पुत्र नितिन, पुत्री नलिनी एवं बिरोहड़ महाविद्यालय से डॉ. सुरेन्द्र सिंह, डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, जितेंद्र, डा. अजय कुमार, अजय सिंह, डा. राजपाल सिंह ने योगदान दिया।

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 14-10-2022

आजादी अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में कार्यक्रम

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्रसिद्ध इतिहासकार केसी यादव की स्मृति पर सेमिनार

भास्कर न्यूज़ | झज्जर

झज्जर. डॉक्टर केसी यादव की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद शिक्षक व छात्र

बिरोहड़ गांव के राजकीय महाविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला में इतिहास विभाग के तत्वावधान में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इतिहासकार प्रोफेसर केसी यादव की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में कई शिक्षाविदों ने भाग लेकर अपने विचार रखे। इस मौके पर सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि प्रोफेसर केसी यादव के व्यक्तित्व और कृतित्व की स्मृति में यह द्वितीय मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया।

प्रोफेसर यादव ने हरियाणा के इतिहास लेखन में नए प्रतिमान स्थापित किए और हरियाणा का बुनियादी इतिहास लिखने का कार्य प्रोफेसर यादव ने किया। सेमिनार के मुख्य वक्ता डॉ. कर्मवीर, इतिहास प्रोफेसर, कृष्णा राजकीय महाविद्यालय कवाली ने कहा कि प्रोफेसर केसी यादव ने क्षेत्रीय इतिहास की परंपरा को नया रूप देते हुए हरियाणा के इतिहास लेखन की अद्भुत परम्परा प्रारम्भ की। समन्वयक डॉ. अनीता रानी ने कहा कि इस सेमिनार के द्वारा प्रोफेसर के सी यादव के देन को आगे बढ़ाने में सहायता मिलेगी और इतिहास लेखन में उनकी परंपरा पुनर्जीवित होगी।

राष्ट्रीय सेमिनार के संरक्षक डॉ. रणवीर सिंह आर्य ने कहा कि इस सेमिनार से प्रोफेसर यादव की इतिहास लेखन परम्परा नये शोधार्थियों में परिलक्षित होती हुई नजर आ रही है। इस अवसर पर महाविद्यालय के डॉ. सुरेन्द्र सिंह, डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह, डॉ. राजपाल सिंह सहित अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

166. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 102nd Birth Anniversary of great freedom fighter Usha Mehta on 12.10.2022 and delivered keynote address on "Congress Radio and Quit India Movement: Role of Usha Mehta."

अमर उजाला, झज्जर 13.10.2022

वीरांगना ऊषा मेहता ने अगस्त क्रांति में चलाया था सीक्रेट रेडियो स्टेशन

22 वर्षीय मेहता ने रेडियो से भरा युवाओं में जोश, बिरोहड़ कॉलेज में विशेष कार्यक्रम का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग द्वारा क्रांतिकारी ऊषा मेहता की 102वीं जयंती पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि ऊषा मेहता वह क्रांतिकारी वीरांगना थी जिन्होंने 1942 की अगस्त क्रांति में युवाओं में जोश भरने के लिए सीक्रेट रेडियो स्टेशन चलाया था।

8 अगस्त 1942 में महात्मा गांधी ने बंबई के ग्वालियर टैंक मैदान से भारत छोड़ो आंदोलन के द्वारा करो या मरो का नारा देकर आजादी की हुंकार भरी थी। परंतु उसी रात ब्रिटिश हुकूमत ने दमनचक्र चलाते हुए ऑपरेशन जीरो ऑवर के तहत कांग्रेस के सभी बड़े बड़े नेताओं को देशभर से गिरफ्तार कर लिया था। ऐसी परिस्थिति में आंदोलन नेतृत्व विहीन होने लगा था, तो युवाओं में जोश भरने के लिए 22 वर्षीय ऊषा मेहता ने सीक्रेट रेडियो स्टेशन की स्थापना की। 1920 में गुजरात के छोटे से गांव सारस में जन्मी मेहता ने भारत छोड़ो आंदोलन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

27 अगस्त 1942 को पहले प्रसारण में ऊषा मेहता ने रेडियो पर घोषणा की कि ये कांग्रेस रेडियो की सेवा है, जो 42.34 मीटर पर भारत के किसी हिस्से से प्रसारित की जा रही है। उस वक्त उनके साथ विट्ठलभाई झावेरी, चंद्रकांत झावेरी, बाबूभाई ठक्कर और ननका मोटवानी थे। ननका मोटवानी शिकागो रेडियो के मालिक थे, इन्होंने ही रेडियो ट्रांसमिशन का काम चलाऊ उपकरण और टेक्नीशियन उपलब्ध करवाए थे।

क्रांतिकारी वीरांगना ऊषा मेहता की जयंती पर व्याख्यान देते हुए। संवाद

लोहिया जैसे नेता भी जुड़े थे रेडियो से

कांग्रेस रेडियो के साथ डॉ. राममनोहर लोहिया, अच्युतराव पटवर्धन और पुरुषोत्तम जैसे सीनियर नेता भी जुड़ चुके थे। कांग्रेस रेडियो के जरिए महात्मा गांधी और कांग्रेस के दूसरे बड़े नेताओं के भाषण प्रसारित किए जाते। ब्रिटिश हुकूमत की नजरों से बचाने के लिए इस खुफिया रेडियो सेवा के स्टेशन करीब-करीब रोज बदले जाते थे। महाविद्यालय की प्रशासनिक इंचार्ज डॉ. अनीता रानी ने कहा कि ऊषा मेहता को काल कोठरी में डाला गया परंतु उन्होंने किसी भी सहयोगी का नाम अंग्रेजी सरकार को नहीं बताया। परिणामस्वरूप उन्हें चार साल की कठोर कारावास की सजा दी गई परंतु उन्होंने आंदोलन को कमजोर नहीं होने दिया। इतिहास प्रोफेसर सवीन और जितेंद्र इत्यादि उपस्थित रहे।

167. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 138th Birth Anniversary of great freedom fighter and revolutionary leader Lala Har Dayal Mahatma Gandhi on 14.10.2022 and delivered keynote address on “Lala Har Dayal: Unsung Hero and Gadar Movement of Indian Freedom Struggle.”

अमर उजाला, झज्जर 15.10.2022

‘लाला हरदयाल ने हिलाई थी ब्रिटिश साम्राज्य की नींव’

स्वतंत्रता सेनानी लाला हरदयाल की जयंती पर विस्तृत व्याख्यान का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास द्वारा विस्तृत व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ. रणबीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान क्रांतिकारी लाला हरदयाल की 138वीं जयंती के अवसर पर उनके योगदान को याद किया गया।

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि लाला हरदयाल गदर आंदोलन द्वारा 1857 की महान क्रांति जैसी सशस्त्र क्रांति करके भारत को आजाद करवाना चाहते थे। उनका जन्म 14 अक्तूबर 1884 को दिल्ली में हुआ था। लाला हरदयाल पढ़ाई में बहुत होशियार थे और उन्होंने दिल्ली के सेंट स्टीफन कॉलेज से संस्कृत में स्नातक और संस्कृत से ही लाहौर के पंजाब विश्वविद्यालय से एमए किया था। लाला हरदयाल छात्रवृत्ति हासिल कर आगे की शिक्षा के लिए लंदन चले गए जहां उन्होंने अपनी कुशाग्र बुद्धि का लोहा मनवाते हुए दो छात्रवृत्तियां हासिल कीं।

उसके बाद आईसीएस में भी चयनित हुए, परंतु जल्द ही उन्होंने देशसेवा के लिए यह नौकरी त्याग दी। 1908 में भारत लौट कर वह बाल गंगाधर तिलक और फिर लाला लाजपत राय से मिले और अंग्रेजी दैनिक पंजाबी का संपादन करने लगे। 1908 में अंग्रेज फिर क्रांतिकारियों के पीछे पड़े तो उनकी नजर में लाला हरदयाल भी थे। इस समाचार पत्र में इनकी ओजस्वी लेखनी से ब्रिटिश अधिकारी इन्हें गिरफ्तार करने की फिराक में रहने लगे इसलिए लाला लाजपत राय ने उन्हें देश छोड़ने की सलाह दी और वह पेरिस चले गए। पेरिस में भी लाला हरदयाल ने लेखन कार्य जारी रखा और मासिक वंदे मातरम पत्रिका का संपादन किया। अमेरिका में उनके देशभक्ति के लेखों को खासी लोकप्रियता मिली और उनके लेखों से प्रेरित होकर हजारों सिखों ने भारत लौटने का फैसला किया।

लाला हरदयाल के जीवन पर प्रकाश डालते वक्ता। संवाद

1913 में किया था गदर पार्टी का गठन

भारतीय इतिहास का क्रांतिकारी मोड़ उस समय आया जब लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाकना इत्यादि ने ब्रिटिश गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने के लिए अमेरिका में 1913 में गदर पार्टी बनाई। लाला हरदयाल इस पार्टी के महासचिव बने और पार्टी का मुख्य उद्देश्य भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह करके आजादी पाना था। करतार सिंह सराभा ने पंजाब आकर एक बड़े क्रांतिकारी आंदोलन की नींव रखी जिसमें भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव जैसे महान क्रांतिकारी पैदा हुए और आजादी के संग्राम ने गति पकड़ी और ब्रिटिश दासता की बेड़ियां कमजोर होने लगीं, जिसमें लाला हरदयाल का एक महत्वपूर्ण योगदान था। इस अवसर पर इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र और अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 15.10.2022

गदर आंदोलन से लाला हरदयाल ने हिलाई ब्रिटिश साम्राज्य की नींव

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में स्वतंत्रता सेनानी लाला हरदयाल के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणबीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी लाला हरदयाल की 138वीं जयंती के मौके पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा लाला हरदयाल ने बाल गंगाधर तिलक और फिर लाला लाजपत राय से मिले। अंग्रेज क्रांतिकारियों के पीछे पड़े तो उनकी नजर में लाला हरदयाल भी थे। लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाकना इत्यादि ने ब्रिटिश गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने के लिए अमेरिका में 1913 में गदर पार्टी बनाई। लाला हरदयाल इस पार्टी के महासचिव बने और पार्टी का मुख्य उद्देश्य भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह करके आजादी पाना था। इस मौके पर इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र और अजय सिंह ने भी अपने विचार रखे।

अमर उजाला चरखी दादरी 15.10.2022

लाला हरदयाल ने हिलाई थी ब्रिटिश साम्राज्य की नींव : डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी लाला हरदयाल की 138वीं जयंती के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि लाला हरदयाल गदर आंदोलन द्वारा भारत को आजाद करवाना चाहते थे। लाला हरदयाल ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी थी। उन्होंने दिल्ली के सेंट स्टीफन कॉलेज से संस्कृत में स्नातक और संस्कृत से ही लाहौर के पंजाब विश्वविद्यालय से एमए किया था।

उन्होंने बताया कि लाला हरदयाल छात्रवृत्ति हासिल कर आगे की शिक्षा के लिए लंदन चले गए जहां उन्होंने दो छात्रवृत्तियां हासिल की और उसके बाद आईसीएस में भी चयनित हुए परंतु उन्होंने देश सेवा के लिए नौकरी त्याग दी। 1908 में भारत लौटकर वे बाल गंगाधर तिलक और फिर लाला लाजपत राय से मिले।

उन्होंने मासिक वंदे मातरम पत्रिका का संपादन किया। अमेरिका में उनके देशभक्ति के लेखों को खासी लोकप्रियता मिली। भारतीय इतिहास का क्रांतिकारी मोड़ उस समय आया जब लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाकना आदि ने ब्रिटिश गुलामी की बेडियों को तोड़ने के लिए अमेरिका में 1913 में गदर पार्टी बनाई।

लाला हरदयाल इस पार्टी के महासचिव बने। पार्टी का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह करके आजादी पाना था। संवाद

168. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 117th Anniversary of Partition of Bengal occurred in 1905 on 15.10.2022 and delivered keynote address on “Partition of Bengal: The Turning Point in Indian Freedom Struggle.”

अमर उजाला, झज्जर 17.10.2022

‘बंगाल विभाजन एक क्रांतिकारी मोड़ था’

बंगाल विभाजन की 117 वीं वर्षगांठ पर बिरोहड कालेज में सेमिनार का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में बंगाल विभाजन की 117 वीं वर्षगांठ मनाई गई।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि भारतीय इतिहास में बंगाल विभाजन एक क्रांतिकारी मोड़ था । जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को नया स्वरूप प्रदान किया। 16 अक्टूबर 1905 को भारत के ब्रिटिश वायसराय लार्ड कर्जन ने बंगाल विभाजन को लागू किया और बंगाल को पूर्वी बंगाल और पश्चिमी बंगाल में बांट दिया था। 1905 में बंगाल में लगभग 7 करोड़ की जनसंख्या थी और आधुनिक बांग्लादेश, बंगाल, बिहार और उड़ीसा के क्षेत्र शामिल थे। लार्ड कर्जन हर प्रकार से भारत में राष्ट्रवादी भावनाओं के प्रसार को रोकना चाहता था और यही बंगाल विभाजन का कारण बना।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में व्याख्यान देते वक्ता । संवाद

लेकिन जनता और कांग्रेस के नेताओं ने ब्रिटिश सरकार के मंसूबों पर पानी फेरते हुए विभाजन विरोधी स्वदेशी आंदोलन की नींव रखी और 16 अक्तूबर को शोक दिवस और राखी दिवस के रूप में मनाया। यह आंदोलन इतना मजबूत रहा कि दिसंबर 1911 में ब्रिटिश सरकार को यह विभाजन रद्द करना पड़ा परन्तु यह आन्दोलन भारतीय आजादी के संग्राम में एक मील का पत्थर साबित हुआ और राष्ट्रवाद का प्रसार का प्रेरक बना।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 17.10.2022

संक्षिप्त समाचार

बंगाल विभाजन ने राष्ट्रवाद की भावना बढ़ाई थी : डा. अमरदीप

विद्यार्थियों को बंगाल विभाजन की जानकारी देते डा. अमरदीप । ● विज्ञप्ति

चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में बंगाल विभाजन की 117वीं वर्षगांठ के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि भारतीय इतिहास में बंगाल विभाजन एक क्रांतिकारी मोड़ था। जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को नया स्वरूप प्रदान किया। 16 अक्टूबर 1905 को भारत के ब्रिटिश वायसराय लार्ड कर्जन ने बंगाल विभाजन को लागू किया और बंगाल को पूर्वी और पश्चिमी दो हिस्सों में बांट दिया था। हालांकि ब्रिटिश सरकार ने इस विभाजन के पीछे प्रशासनिक कारण बताए थे लेकिन वास्तविक कारण बंगाल में बढ़ती हुई राष्ट्रवादी भावनाएं थी। 1905 में बंगाल में लगभग 7 करोड़ की जनसंख्या थी और आधुनिक बांग्लादेश, बंगाल, बिहार और उड़ीसा के क्षेत्र शामिल थे। (जासं)

169. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 26th Death Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Ramkrishana Khatri on 18.10.2022 and delivered keynote address on "Contribution of Ramkarishana Khatri in Revolutionary Movement."

अमर उजाला, चरखी दादरी 19.10.2022

'चंद्रशेखर आजाद और राम प्रसाद बिस्मिल के सहयोगी थे रामकृष्ण'

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में विचार रखते प्रवक्ता डॉ. अमरदीप। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

स्वतंत्रता सेनानी रामकृष्ण की पुण्य तिथि पर हुआ कार्यक्रम

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी रामकृष्ण खत्री की 26वीं पुण्य तिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि रामकृष्ण खत्री को काकोरी ट्रेन डकैती में सक्रिय भागीदारी होने के कारण 10 साल की कठोर सजा हुई थी। क्रांतिकारी रामकृष्ण खत्री का जन्म 1902 में वर्तमान महाराष्ट्र के जिला बुलढाना बरार के चिखली गांव में हुआ। बचपन से ही वे बाल गंगाधर तिलक से प्रभावित थे। रामकृष्ण खत्री ने राष्ट्रवाद का प्रसार करने के लिए उदासीन मंडल नामक संस्था बनाई। चौरी-चौरा की घटना के बाद उनका महात्मा गांधी के मार्ग से मोह भंग हो गया और क्रांति पथ पर चल पड़े। 1923 में इनकी मुलाकात महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद से हुई और उत्तर प्रदेश में क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय रूप से जुड़ गये। भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार, इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र और पवन कुमार उपस्थित रहे।

अमर उजाला, झज्जर 19.10.2022

जयंती पर क्रांतिकारी रामकृष्ण खत्री को किया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

स्वतंत्रता सेनानी रामकृष्ण खत्री की 26वीं पुण्यतिथि पर व्याख्यान देते वक्ता। संवाद

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी रामकृष्ण खत्री की 26 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

महाविद्यालय प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में कार्यक्रम हुआ। डा. अमरदीप ने कहा कि रामकृष्ण खत्री को काकोरी ट्रेन डकैती में सक्रिय भागीदारी होने के कारण 10 साल की कठोर सजा हुई थी। क्रांतिकारी रामकृष्ण खत्री का जन्म 1902 को वर्तमान महाराष्ट्र के जिला बुलढाना बरार के चिखली गाँव में हुआ। बचपन से ही वे बाल गंगाधर तिलक से प्रभावित थे। उन्होंने असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया परन्तु चौरी चौरा की घटना के बाद उनका महात्मा गाँधी के मार्ग से मोह भंग हो गया और क्रांतिपथ पर चल पड़े।

170. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special tree plantation drive on 90th Martyrdom of great freedom fighter and Revolutionary Pritilata Waddekar on 19.10.2022 and delivered keynote address on “Pritilata Waddekar: Great Veerangna of Freedom Struggle of India.”

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 20-10-2022

आजादी अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

महान क्रांतिकारी व वीरांगना प्रीतिलता वाडेकर के 90वें शहीदी दिवस पर पौधरोपण किया

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान क्रांतिकारी एवं वीरांगना प्रीति लता वाडेकर के 90वें शहीदी दिवस पर पौधरोपण किया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, पवन कुमार, अजय सिंह एव दीपक द्वारा पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि बंगाल की राष्ट्रवादी क्रांतिकारी थीं। वह एक प्रतिभावान छात्रा थीं। प्रीति लता वादे दार ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा पूर्ण की थी। चटगांव शस्त्रागार कांड' की घटना से प्रभावित होकर इन्होंने क्रांतिकारी मास्टर सूर्य सेन के दल की सदस्यता ले ली थी। 1932 में प्रीति लता वादे दार ने ही सूर्य सेन के साथ मिलकर यूरोपीय क्लब पर हमला किया था। इस हमले में 13 अंग्रेज जख्मी हो गए और बाकी भाग गए। थोड़ी देर बाद उस क्लब से गोलीबारी होने लगी। प्रीति लता के शरीर में एक गोली लगी। वे घायल अवस्था में भागीं, लेकिन फिर गिरीं परन्तु उसने प्रण लिया था कि अंग्रेज उन्हें जीवित नहीं पकड़ पाएंगे और इसलिए अपने पास रखा पोटेशियम सायनाइड खा लिया। उस समय उनकी उम्र 21 साल थी और इतनी कम आयु में होने के बाद प्रीति लता ने क्रांतिपथ का ऊंचाई प्रदान करते हुए चंद्रशेखर आजाद की तरह शहीदी पाई। इस अवसर पर पवन कुमार, अजय सिंह, दीपक इत्यादि उपस्थित रहे।

वीरांगना प्रीतिलता वाडेकर के 90वें शहीदी दिवस पर पौधरोपण करते हुए।

अमर उजाला, झज्जर 20.10.2022

शहादत

राष्ट्रवादी क्रांतिकारी की नायिका थीं प्रीतिलता, 21 साल की आयु में देश के लिए हुईं कुर्बान

शहीदी दिवस पर पौधरोपण कर वीरांगना को किया नमन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान क्रांतिकारी एवं वीरांगना प्रीतिलता वाडेकर की 90 शहीदी दिवस पर पौधरोपण कार्यक्रम किया गया।

इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, पवन कुमार, अजय सिंह और दीपक द्वारा पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि प्रीतिलता बंगाल की राष्ट्रवादी क्रांतिकारी थीं। वह एक प्रतिभावान छात्रा थीं। प्रीतिलता वाडेकर ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा पूर्ण की थी। 'चटगांव शस्त्रागार कांड' की घटना से प्रभावित होकर इन्होंने क्रांतिकारी मास्टर सूर्य सेन के दल की सदस्यता ले ली थी। 1932 में प्रीतिलता वाडेकर ने ही सूर्य सेन के साथ मिलकर यूरोपीय क्लब पर हमला किया था। इस हमले में 13 अंग्रेज जख्मी हो गये और बाकी भाग गये। थोड़ी देर बाद उस क्लब से गोलीबारी होने लगी। प्रीतिलता के शरीर में एक गोली लगी। वे घायल अवस्था में भागीं, लेकिन फिर गिरीं और परंतु उसने प्रण लिया था कि अंग्रेज उन्हें जीवित नही पकड़ पाएंगे और इसलिए अपने पास रखा पोटेशियम सायनाइड खा लिया। उनकी उम्र 21 साल थी और इतनी कम आयु में होने के बावजूद प्रीतिलता ने क्रांतिपथ का ऊंचाई प्रदान करते हुए चंद्रशेखर आजाद की तरह शहीदी पाई। इस अवसर पर पवन कुमार, अजय सिंह व दीपक आदि उपस्थित रहे।

वीरांगना प्रीतिलता वाडेकर के शहीदी दिवस पर पौधरोपण करते हुए। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 20.10.2022

क्रांतिकारी वीरांगना प्रीतिलता वाडेकर के 90वें बलिदान दिवस पर किया पौधारोपण

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में क्रांतिकारी एवं वीरांगना प्रीतिलता वाडेकर के 90वें बलिदान दिवस पर पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर डा. अमरदीप, पवन कुमार, अजय सिंह व दीपक ने कहा कि वह बंगाल की राष्ट्रवादी क्रांतिकारी थीं। प्रीतिलता वाडेकर ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा पूर्ण की थी। चटगांव शस्त्रागार कांड की घटना से प्रभावित होकर इन्होंने क्रांतिकारी मास्टर सूर्य सेन के दल की सदस्यता ले ली थी। 1932 में प्रीतिलता वाडेकर ने ही सूर्य सेन के साथ मिलकर यूरोपीय क्लब पर हमला किया था। इस हमले में 13 अंग्रेज जख्मी हो गए और बाकी भाग गए। थोड़ी देर बाद उस क्लब से गोलीबारी होने लगी। प्रीतिलता के शरीर में एक गोली लगी। वे घायल अवस्था में भागी लेकिन फिर गिरीं। उनका प्रण था कि वह जिंदा अंग्रेजों के हाथ नहीं आएंगी। इसलिए अपने पास रखा पोटेशियम सायनाइड खा लिया। उस समय उनकी उम्र 21 साल थी और इतनी कम आयु में प्रीतिलता ने चंद्रशेखर आजाद की तरह बलिदान दिया। इस अवसर पर पवन कुमार, अजय सिंह, दीपक इत्यादि भी उपस्थित रहे।

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में क्रांतिकारी वीरांगना प्रीतिलता वाडेकर के बलिदान दिवस पर पौधारोपण करते प्रोफेसर। ● विज्ञप्ति

अमर उजाला, चरखी दादरी 20.10.2022

क्रांतिकारी प्रीतिलता वाडेकर को किया याद

बिरोहड़ कॉलेज में पौधरोपण करते प्रोफेसर।

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में महान क्रांतिकारी एवं वीरांगना प्रीतिलता वाडेकर के 90वें शहीदी दिवस पर पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि वाडेकर बंगाल की राष्ट्रवादी क्रांतिकारी थीं। प्रीतिलता ने कोलकता विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा पूर्ण की थी। चटगांव शस्त्रागार कांड की घटना से प्रभावित होकर उन्होंने क्रांतिकारी मास्टर सूर्य सेन के दल की सदस्यता ली। 1932 में प्रीतिलता वाडेदार ने ही सूर्य सेन के साथ मिलकर यूरोपीय क्लब पर हमला किया और इस हमले में 13 अंग्रेज जख्मी हुए जबकि बाकी भाग गए। कार्यक्रम में पवन कुमार, अजय सिंह व दीपक आदि मौजूद रहे। संवाद

171. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 175th Birth Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Nellie Sengupta Annie Besant on 27.10.2022 and delivered keynote address on "Role and Contribution of Nellie Sengupta in Indian Freedom Struggle."

अमर उजाला, झज्जर 28.10.2022

'ब्रिटिश शासन के खिलाफ बिगुल बजाने में अग्रणी रहीं नेली सेनगुप्ता'

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में पुण्यतिथि पर स्वतंत्रता सेनानी नेली को किया गया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम हुआ। जिसमें महान स्वतंत्रता सेनानी नेली सेनगुप्त को 49वीं पुण्यतिथि के अवसर पर याद किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि नेली सेनगुप्त ब्रिटिश महिला होते हुए भी भारत की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी। नेली सेनगुप्त का मूल नाम एडिथ एलेन ग्रे था और उनका जन्म 1886 में कैंब्रिज, इंग्लैंड में हुआ था। उनकी काबिलियत इस कदर थी कि उन्हें 1933 में कलकत्ता में 47 वें वार्षिक सत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया था। वह तीसरी महिला थी जो इस पद पर पहुंची थी। उन्होंने 1904 में सीनियर कैम्ब्रिज पास की। भारत के राष्ट्रवादी नेता यतींद्र मोहन सेनगुप्त से 1909 में विवाह होने से पूर्व वे नेली ग्रे थीं। विवाह के बाद नेली उनके पति के साथ चटगांव आईं और उनकी सहचरी के रूप में 1921 से स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। असहयोग आंदोलन के समय उन्होंने पति की जेल यात्राओं के दौरान आम सभाओं थी को संबोधित किया और जेल गईं।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में व्याख्यान देते डॉ. अमरजीत। संवाद

चार माह भुगती थी सजा

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान नेली सेनगुप्त ने 1931 में दिल्ली में अंग्रेजों द्वारा गैर कानूनी घोषित सभा में आजादी की मांग के लिए भाषण देने के कारण चार माह की सजा भुगती। तीस के दशक में जब कई कांग्रेसी नायक जेल में थे, तब उन्होंने निर्भीक होकर राष्ट्रप्रेम का प्रचार किया। 1933 के कोलकाता कांग्रेस के लिए चुने गए अध्यक्ष मालवीय जब पकड़े गए। तब नेली एकमत से अध्यक्ष चुनी गईं और ब्रिटिश शासन के खिलाफ जमकर प्रचार किया 1940 व 46 में बंगाल लेजिस्लेटिव असेंबली में वे निर्विरोध चुनी गईं। विभाजन के बाद वह पूर्वी पाकिस्तान, वर्तमान बांग्लादेश में रहीं। जहां उनका तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने जोरदार स्वागत करते हुए उन्हें भारत की नारी शक्ति का केंद्र बताया था। अक्तूबर 1973 में नेली सेनगुप्ता का कलकत्ता, भारत में ही निधन हो गया था। उनका संपूर्ण जीवन त्याग और राष्ट्र प्रेम को समर्पित था।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 28.10.2022

ब्रिटिश नागरिक नेली ने भी भारत की आजादी के लिए किया संघर्ष

बिरोहड़ कालेज में स्वतंत्रता सेनानी नेली सेनगुप्त के बारे में बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति

जासं, चरखी दादरी : आजादी के अमृत महोत्सव के तहत गांव राजकीय कालेज बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी नेली सेनगुप्त की 49वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि नेली सेनगुप्त ब्रिटिश महिला होते हुए भी भारत की आजादी के लिए लड़ी। नेली सेनगुप्त का मूल नाम एडिथ एलेन ग्रे था और उनका जन्म 1886 में कैम्ब्रिज इंग्लैंड में हुआ था। उनकी काबिलियत इस कदर थी कि 1933 में कलकत्ता में उन्हें 47वें वार्षिक सत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया था।

दैनिक भास्कर — झज्जर भास्कर 28-10-2022

'नेली सेनगुप्त ब्रिटिश महिला होते हुए भी भारत की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी'

बिरोहड़ के राजकीय कॉलेज में मनाई पुण्यतिथि

झज्जर. विशेष कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते हुए डॉक्टर अमरजीत।

भास्कर न्यूज़ | झज्जर

गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय कॉलेज में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस ने महान स्वतंत्रता सेनानी नेली सेनगुप्त की 49वीं पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम किया। इसमें कार्यक्रम संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि नेली सेनगुप्त ब्रिटिश महिला होते हुए भी भारत की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी। नेली सेनगुप्त का मूल नाम एडिथ एलेन ग्रे था और उनका जन्म 1886 में कैम्ब्रिज, इंग्लैंड में हुआ था। उनकी काबिलियत इस कद्र थी कि 1933 में कलकत्ता में अपने 47वें वार्षिक सत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया था। वह तीसरी महिला थी जो इस पद पर पहुंची थी। उन्होंने 1904 में सीनियर कैम्ब्रिज पास की। भारत के राष्ट्रवादी नेता यतीन्द्र मोहन सेनगुप्त से 1909 में विवाह होने से पूर्व वे नेली ग्रे थीं। विवाह के बाद नेली उनके पति के साथ चटगांव आईं और उनकी सहचरी के रूप में वर्ष 1921 से स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेन्द्र आदि प्रबुद्ध लोग उपस्थित रहे।

172. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 108th Birth Anniversary of great freedom fighter Captain Lakshmi Sehgal on 28.10.2022 and delivered keynote address on “Azad Hind Fauj and Contribution of Captain Lakshmi Sehgal.”

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 29-10-2022

विचार • बिरोहड़ के राजकीय कॉलेज में क्रांतिकारी वीरांगना कैप्टन लक्ष्मी सहगल की जयंती मनाई

वीरांगना कैं. लक्ष्मी सहगल ने आजाद हिंद फौज की रानी झांसी ब्रिगेड की कमान संभाली थी

भास्कर न्यूज़ | झज्जर

गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय कॉलेज में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस ने महान स्वतंत्रता सेनानी व क्रांतिकारी वीरांगना कैप्टन लक्ष्मी सहगल की 108वीं जयंती पर विशेष कार्यक्रम किया। इसमें कार्यक्रम संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने आजाद हिंद फौज की रानी झांसी ब्रिगेड की कमान संभाली थी। 24 अक्टूबर वर्ष 1914 को चेन्नई में जन्मीं लक्ष्मी स्वामीनाथन बचपन से ही अपने कार्यों के लिए विख्यात थी। डॉ. अमरदीप ने बताया कि आजादी के बाद आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्ति के राह पर चलते हुए उन्होंने कमजोर और निम्न वर्गों के उत्थान का रास्ता अपनाया। 1971 के भारत पाक युद्ध के दौरान लक्ष्मी ने बॉर्डर के आस-पास के क्षेत्रों में लोगों की मदद की। बाद में कोलकाता में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया, मार्कसिस्ट ज्वाइन की और 1981 में लक्ष्मी ने ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक वुमंस एसोसिएशन की स्थापना की। महिलाओं की दशा बदलने के लिए उन्होंने ताउम्र संघर्ष किया। आज विद्यार्थियों का ऐसी महान योद्धा से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।

झज्जर. विचार में करते डॉक्टर अमरजीत।

अमर उजाला, झज्जर 29.10.2022

नेताजी से बैठक के बाद कैप्टन सहगल ने संभाली थी रानी झांसी ब्रिगेड की कमान

आजाद हिंद फौज की महान क्रांतिकारी लक्ष्मी सहगल की जयंती पर बिरोहड़ कॉलेज में हुआ व्याख्यान

संवाद न्यूज एजेंसी

बिरोहड़ कॉलेज में लक्ष्मी सहगल की जयंती पर व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

झज्जर। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी कैप्टन लक्ष्मी सहगल की 108वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने आजाद हिंद फौज की रानी झांसी ब्रिगेड की कमान संभाली थी।

उन्होंने बताया कि 24 अक्टूबर 1914 को चेन्नई में जन्मीं लक्ष्मी स्वामीनाथन बचपन से ही अपने कार्यों के लिए विख्यात थी। लक्ष्मी सहगल का ठोस विचार था कि स्वतंत्रता तीन रूपों में आती है, पहली विदेशी साम्राज्यवाद से मुक्ति जो राजनीतिक आजादी है। इसका दूसरा स्वरूप आर्थिक है और तीसरा सामाजिक स्वतंत्रता है। सामाजिक स्वतंत्रता के इसी क्रम में उन्होंने पहला विद्रोह बचपन में जातीय बंधनों को तोड़ते हुए निम्न वर्गों के बच्चों के साथ खेलने के साथ किया जिसका सबसे ज्यादा विरोध उनकी दादी करती थीं। स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद लक्ष्मी ने मेडिकल की पढ़ाई शुरू की और 1938 में मद्रास मेडिकल कॉलेज से परीक्षा पास करके एक डॉक्टर बन गईं। द्वितीय विश्व युद्ध के लिए जब भारतीयों की भर्ती के दौरान उन्होंने ब्रिटिश सरकार का साथ नहीं देने का वचन लिया। उसी समय लक्ष्मी सहगल अपने रिश्तेदारों के पास सिंगापुर चली गईं और निजी रूप से चिकित्सक का कार्य करने लगी। उसी समय आजाद हिंद फौज की कमान सुभाषचंद्र बोस ने सिंगापुर में संभाल ली थी। लक्ष्मी सहगल ने सुभाषचंद्र बोस के साथ 5 घंटे की लंबी मीटिंग की और रानी झांसी ब्रिगेड का गठन हुआ।

8 जुलाई, 1943 को रानी झांसी रेजिमेंट में महिलाओं की भर्ती शुरू हुई और 1500 स्वतंत्रता सेनानी और 200 नर्सों को इस रेजिमेंट में शामिल किया गया। 3 महीने की कड़ी ट्रेनिंग के बाद लक्ष्मी समेत अन्य महिलाएं युद्ध मोर्चे की ओर रवाना हुईं। बर्मा के मध्य तक ही रानी झांसी रेजिमेंट बढ़ पाई। ईंफाल में फौज ने जापानी आर्मी के साथ मिलकर हमला किया था जिसे अंग्रेजों ने बुरी तरह दबाया और हारकर फौज को वापस लौटना पड़ा। उसी समय फौज ने बर्मा में ही अंग्रेजों को मुंहतोड़ जवाब दिया। गौरतलब है कि रानी झांसी रेजिमेंट को निरस्त कर दिया गया और बर्मा में उनको परिवारों के पास वापस भेजा गया। कोई भी सिपाही जाने को तैयार नहीं थी और सभी ने खून से दस्तखत की हुई चिट्ठी नेताजी को भेजी। इसके बाद लक्ष्मी सहगल ने आजाद हिंद फौज के अस्पताल में अपनी सेवाएं देने का निर्णय लिया। जून 1945 में लक्ष्मी और फौज के कई लोग गिरफ्तार कर लिए गए। लक्ष्मी को रंगून भेजा गया और नजरबंद रखा गया। मार्च, 1946 में लक्ष्मी को वापस भारत भेज दिया गया।

आजादी के बाद अपनाया कमजोरों के उत्थान का रास्ता

डॉ. अमरदीप ने बताया कि आजादी के बाद आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्ति के राह पर चलते हुए उन्होंने कमजोर और निम्न वर्गों के उत्थान का रास्ता अपनाया। 1971 के भारत पाक युद्ध के दौरान लक्ष्मी ने बॉर्डर के आस-पास के क्षेत्रों में लोगों की मदद की। बाद में कोलकाता में कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सिस्ट) ज्वाइन की। 1981 में लक्ष्मी ने आल इंडिया डेमोक्रेटिक वुमेंस एसोशिएशन की स्थापना की और महिलाओं की दशा बदलने के लिए उन्होंने ता-उम्र संघर्ष किया। आज विद्यार्थियों का ऐसी महान योद्धा से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 29.10.2022

कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने संभाली थी रानी झांसी ब्रिगेड की कमान

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज मे क्रांतिकारी वीरांगना कैप्टेन लक्ष्मी सहगल के बारे मे बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में क्रांतिकारी वीरांगना कैप्टन लक्ष्मी सहगल की 108 वीं जयंती के अवसर पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने आजाद हिंद फौज की रानी झांसी ब्रिगेड की कमान संभाली थी। 24 अक्टूबर 1914 को चेन्नई में जन्मीं लक्ष्मी स्वामीनाथन बचपन से ही अपने कार्यों के लिए विख्यात थी। लक्ष्मी सहगल का ठोस विचार था कि स्वतंत्रता तीन रूपों में आती है। पहली विदेशी साम्राज्यवाद से मुक्ति जो राजनीतिक आजादी है, इसका दूसरा स्वरूप आर्थिक है और तीसरा सामाजिक स्वतंत्रता है। डा. अमरदीप ने बताया कि विद्यार्थियों का ऐसी महान योद्धा से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।

173. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 147th Birth Anniversary of great freedom fighter Sardar Vallabhbhai Patel on 31.10.2022 and delivered keynote address on “Establishment of Union of India: Contribution of Sardar Patel.”

jhajjarabhitaklive.com/2022/10/31/haryana-abhitak-news-31-10-22/

Haryana Abhitak News 31/10/22

झज्जर हरियाणा एनसीआर चंडीगढ़ राजनीति

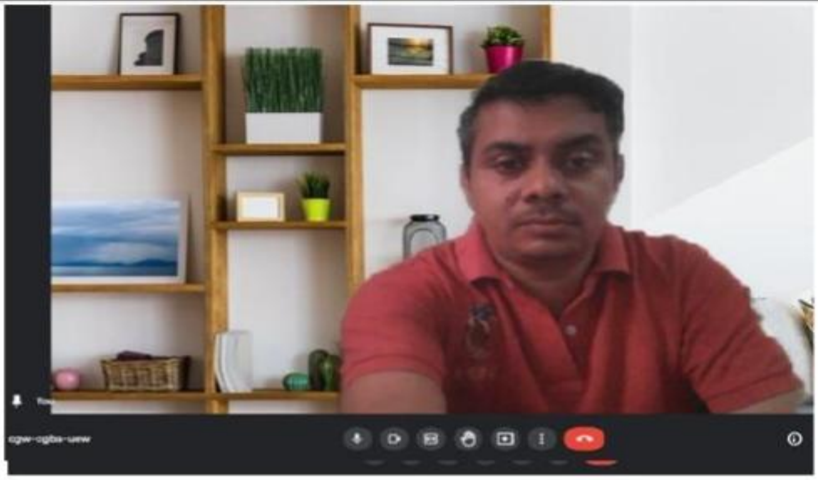

पटेल पुरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने की अद्‌भुत कला और प्रतिभा के धनी थे सरदार पटेल: डा. अमरदीप

झज्जर, 31 अक्टूबर (अभीतक) : सोमवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी सरदार वल्लभभाई पटेल की 147 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल पुरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने की अद्‌भुत कला और प्रतिभा के धनी थे। वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में हुआ। लंदन जाकर उन्होंने बैरिस्टर की पढ़ाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया। स्वतंत्रता आंदोलन में सरदार पटेल का पहला और बड़ा योगदान 1918 में खेड़ा संघर्ष में था। परन्तु 1928 में हुए बारदोली सत्याग्रह में किसान आंदोलन ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर के नेता के रूप में ख्याति दिलवाई। बारडौली का किसान आंदोलन भी ब्रिटिश अफसरों द्वारा उत्पीडन एवं पुलिस ज्यादती का शिकार हो चला। 1924 और 1927 में दो बार बढ़े हुए लगान की वसूली का विरोध तीव्र हुआ। सरदार पटेल ने मोर्चा संभाला और किसानों ने मद्यपान छोड़ दिया एवं औरतों ने पीतल के भारी गहने छोडक़र खादी चरखे को अपना लिया। गांव-गांव में सत्याग्रह के गीत गूंजने लगे और बड़ी-बड़ी जनसभाएं हुईं। आन्दोलन से भयभीत होकर अंग्रेज सरकार ने लगान वृद्धि वापिस लेनी पड़ी और भारत की मिट्टी एवं किसान की ऐतिहासिक जीत हुई जिसका श्रेय देते हुए बारडौली की महिलाओं ने वल्लभभाई को सरदार की उपाधि से सम्मानित किया था। सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोड़ों आन्दोलन में भी सरदार पटेल की भूमिका अद्वितीय रही परन्तु सरदार पटेल को भारत की एकता और अखण्डता बनाये रखने में उनके अविस्मरणीय योगदान के लिए सर्वाधिक जाना जाता है। आज़ादी के बाद 562 देशी रियासतों को भारत के तिरंगे के नीचे लेकर आना निश्चित रूप से एक भागीरथी कार्य था। जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर जैसी रियासते अपना अलग अस्तित्व बनाने की फिराक में थी। उनको भारत में विलय करने के लिए सरदार पटेल ने बेहद सटीक रणनीति के तहत इन्हें भारत में शामिल किया। हैदरबाद में सरदार पटेल का ऑपरेशन पोलो एक अद्‌भुत एवं सफल सैनिक कार्यवाही थी जिसने हैदराबाद के निज़ाम को घुटने टेकने के लिए मजबूर कर दिया और यह दिखा दिया था किसी भी देसी रियासत का भारत से बाहर कोई अस्तित्व नही है। इतिहास प्रोफेसर जितेन्द्र ने कहा कि इन्ही कार्यों से आज भारत एक बड़ी शक्ति के रूप में उभर रहा है और पड़ोसी देशो द्वारा भारत से युद्ध करने और आतंकवाद के जरिये तोडने की कई साजिसें हुई है, परन्तु सरदार पटेल के अखंड भारत इन सबकी नाकाम करता हुआ आगे बढता हुआ विश्व शक्ति के रूप में उभरता जा रहा है।

174. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 111th Birth Anniversary of great freedom fighter Ashok Mehta on 05.11.2022 and delivered keynote address on "Ashok Mehta: Unforgettable Freedom Fighter."

अमर उजाला, चरखी दादरी 06.11.2022

अशोक मेहता ने मजदूर उत्थान के लिए किया संघर्ष : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी अशोक मेहता की 111 वीं जयंती मनाई गई।

इस अवसर पर एक विशेष ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि अशोक मेहता स्वतंत्रता आंदोलन के महान समाजवादी और क्रांतिकारी नेता थे ,जिन्होंने भारत में कामगार वर्ग के उत्थान के लिए संघर्ष किया। 1911 में गुजरात के भावनगर में जन्में अशोक मेहता ने अपनी शिक्षा बम्बई के विल्सन कॉलेज से पूरी की। उनके जीवन तथा विचारों पर स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ ठाकुर, कार्ल मार्क्स इत्यादि का प्रभाव पड़ा था। महात्मा गांधी से प्रभावित होकर उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ों आंदोलन में भाग लिया और कई बार जेल जाना पड़ा। पंचायती राज व्यवस्था में सुधार के लिए 1977 में इनकी अध्यक्षता में अशोक मेहता समिति बनाई गई जिसने व्यापक सुधार और विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया को और मजबूत किया था।

डॉ. अमरदीप।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी की जयंती पर किया ऑनलाइन व्याख्यान

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 06.11.2022

महान क्रांतिकारी नेता थे अशोक मेहता : डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डा. रणबीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी अशोक मेहता की 111वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष आनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि अशोक मेहता स्वतंत्रता आंदोलन के महान समाजवादी और क्रांतिकारी नेता थे।

1911 में गुजरात के भावनगर में जन्में अशोक मेहता ने अपनी शिक्षा मुम्बई के विल्सन कालेज से पूरी की। उनके जीवन तथा विचारों पर स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, रविंद्रनाथ ठाकुर, कार्ल मार्क्स इत्यादि का प्रभाव पड़ा था। महात्मा गांधी से प्रभावित होकर उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ों आंदोलन में भाग लिया। उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। इन जेल यात्राओं में उनका संपर्क अच्युत पटवर्धन और जयप्रकाश नारायण जैसे व्यक्तियों से हुआ। 1934 में जब कांग्रेस समाजवादी दल का गठन हुआ तब 23 वर्ष के नवयुवक अशोक मेहता उसके सदस्य बने। उन्होंने पार्टी के साप्ताहिक कांग्रेस सोशलिस्ट का 1939 तक संपादन किया। अशोक मेहता ने भारत के किसान आंदोलन और श्रमिक आंदोलन से भी गहरा रिश्ता रखा था। आज़ादी के बाद अशोक मेहता की अध्यक्षता में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का निर्माण हुआ। वे दो बार लोकसभा के सदस्य चुने गए। पंचायती राज व्यवस्था में सुधार के लिए 1977 में इनकी अध्यक्षता में अशोक मेहता समिति बनाई गई। जिसने व्यापक सुधार और विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया को और मजबूत किया था।

झज्जर भास्कर 06-11-2022

अशोक मेहता ने भारत के मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए आजीवन संघर्ष किया

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी अशोक मेहता की 111वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि अशोक मेहता स्वतंत्रता आन्दोलन के महान समाजवादी और क्रांतिकारी नेता थे जिन्होंने भारत में कामगार वर्ग के उत्थान के लिए संघर्ष किया। 1911 में गुजरात के भावनगर में जन्में अशोक मेहता ने अपनी शिक्षा बम्बई के विल्सन कॉलेज से पूरी की। उनके जीवन तथा विचारों पर स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, कार्ल मार्क्स इत्यादि का प्रभाव पड़ा था। महात्मा गांधी से प्रभावित होकर उन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और कई बार जेल जाना पड़ा। इन जेल यात्राओं में उनका सम्पर्क अच्युत पट वर्धन और जयप्रकाश नारायण जैसे व्यक्तियों से हुआ। 1934 में जब 'कांग्रेस समाजवादी दल' का गठन हुआ, तब 23 वर्ष के नवयुवक अशोक मेहता उसके सदस्य बने। उन्होंने पार्टी के साप्ताहिक 'कांग्रेस सोशलिस्ट' का 1939 तक सम्पादन किया। अशोक मेहता ने भारत के 'किसान आन्दोलन' और 'श्रमिक आन्दोलन' से भी गहरा रिश्ता रखा था और उन्हें एकजुट एवं संघर्षरत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आजादी के बाद अशोक मेहता की अध्यक्षता में 'प्रजा सोशलिस्ट पार्टी' का निर्माण हुआ। वे दो बार लोकसभा के सदस्य चुने गए। अशोक मेहता कुछ समय तक 'योजना आयोग' के उपाध्यक्ष भी रहे। पंचायती राज व्यवस्था में सुधार के लिए 1977 में इनकी अध्यक्षता में अशोक मेहता समिति बनाई गई जिसने व्यापक सुधार और विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया को और मजबूत किया था।

175. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 160th Martyrdom of great freedom fighter and Mughal Emperor Bahadurshah Zafar on 08.11.2022 and delivered keynote address on “Bahadurshah Zafar and Contribution in Revolt of 1857.”

अमर उजाला, झज्जर 08.11.2022

श्रद्धांजलि

मुगल बादशाह की पुण्यतिथि पर ऑनलाइन विस्तार व्याख्यान का आयोजन

बहादुरशाह ने 1857 की क्रांति को बनाया राष्ट्रव्यापी

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 175 वां कार्यक्रम हुआ। जिसमें महान स्वतंत्रता सेनानी बहादुरशाह जफर के 160वें शहीदी दिवस के अवसर पर ऑनलाइन विस्तृत व्याख्यान आयोजित किया गया।

इस ऑनलाइन कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने 1857 के महान क्रांति की कमान संभालकर क्रांति को राष्ट्रव्यापी स्वरुप दिया। 10 मई 1857 को सर्वप्रथम अंबाला में क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी राज के खिलाफ आजादी का बिगुल बजाया। इसी दिन यही कारनामा मेरठ से भारतीय सिपाहियों ने भी अंजाम दिया और मेरठ और अंबाला से ब्रिटिश राज के चिन्ह समाप्त किए गए। इसके बाद क्रांतिकारियों ने दिल्ली का रुख किया और उनका लक्ष्य बादशाह बहादुरशाह जफर था, जो इस महान संग्राम को एक राष्ट्रीय स्वरूप दे सकते थे। 82 वर्षीय बहादुरशाह जफर हालांकि उस समय केवल नाममात्र के बादशाह थे परंतु परंपरागत मान्यतानुसार वे संपूर्ण भारत के बादशाह थे। इसलिए आजादी के इस संग्राम को केंद्रीय नेतृत्व देने के लिए उन्होंने क्रांतिकारियों के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और एक बार फिर से लाल किले से स्वदेशी राज्य स्थापित हो गया। तकनीकी रूप से ब्रिटिश राज भारत से समाप्त हो गया था। दिल्ली का शासन संभालने के लिए एक समिति का गठन किया गया। बहादुरशाह जफर अब राष्ट्रीय विरोध का प्रतिक बन गये थे और ब्रिटिश राज हर कीमत पर उन्हें इस संग्राम से हटाना चाहता था परंतु सफल नहीं हो पा रहे थे।

धीरे-धीरे अंग्रेजों ने फिर से दिल्ली और आसपास के इलाके, अवध, झांसी, काल्पी, ग्वालियर इत्यादि पर अपनी पकड़ मजबूत बनानी शुरू की। 21 सितंबर 1857 को बहादुरशाह जफर को हुमायूं के मकबरे से ब्रिटिश अधिकारी विलियम हडसन ने गिरफ्तार कर लिया। लाल किले में 18 जनवरी 1858 को बहादुर शाह जफर पर विद्रोह, राजद्रोह और हत्या के आरोपों पर मुकदमा आरंभ हुआ। यह लगभग दो महीनों तक चला। पूर्वनिर्धारित तरीके से जफर को दोषी ठहराया गया और उन्हें भारत से निर्वासित किए जाने का दंड दिया गया, विदेश में ही उनकी मौत हुई।

दो गज जमीन भी न मिली भारत में

रंगून, बर्मा में निर्वासन के दौरान 7 नवंबर 1862 को आजादी के पहले संग्राम के मुख्य सेनानी का निधन हो गया। जफर के शब्दों में उन्हें दफनाने के दो गज जमीन भी भारत की नसीब नहीं हुई परंतु फिर भी उन्होंने आजादी के आंदोलन को एक नई दिशा और गति प्रदान की। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य, प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार, डॉ. नरेंद्र सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 08-11-2022

महान स्वतंत्रता सेनानी बहादुरशाह का 160वां शहीदी दिवस मनाया

झज्जर | आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में 175वां कार्यक्रम महान स्वतंत्रता सेनानी बहादुरशाह जफर का 160वां शहीदी दिवस मनाया। इस ऑनलाइन कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने 1857 के महान क्रांति की कमान संभालकर क्रांति को राष्ट्रव्यापी स्वरुप दिया।10 मई 1857 को सर्वप्रथम अम्बाला में क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी राज के खिलाफ आजादी का बिगुल बजाया और इसी दिन यही कारनामा मेरठ से भारतीय सिपाहियों ने भी अंजाम दिया और मेरठ और अम्बाला से ब्रिटिश राज के चिन्ह समाप्त किए। इसके बाद क्रांतिकारियों ने दिल्ली का रुख किया और उनका लक्ष्य भारत का मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर था, जो इस महान संग्राम को एक राष्ट्रीय स्वरूप दे सकता था।82 वर्षीय बहादुरशाह जफर हालांकि उस समय केवल नाममात्र के साम्राज्य के बादशाह थे परन्तु परम्परागत मान्यतानुसार वे सम्पूर्ण भारत के बादशाह थे इसलिए आज़ादी के इस संग्राम को केंद्रीय नेतृत्व देने के लिए उन्होंने क्रांतिकारियों के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

अमर उजाला, चरखी दादरी 08.11.2022

महान स्वतंत्रता सेनानी बहादुर शाह के बारे में बताया

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 175वां कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें विद्यार्थियों को महान स्वतंत्रता सेनानी बहादुर शाह जफर के बारे में जानकारी दी गई।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर ने 1857 की क्रांति की कमान संभालकर इसे राष्ट्रव्यापी स्वरूप दिया। 10 मई 1857 को सर्वप्रथम अंबाला में क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी राज के खिलाफ आजादी का बिगुल बजाया और इसी दिन यही कारनामा मेरठ से भारतीय सिपाहियों ने भी अंजाम दिया। सिपाहियों ने मेरठ व अंबाला से ब्रिटिश राज के चिह्न समाप्त किए। इसके बाद क्रांतिकारियों ने दिल्ली का रुख किया। उनका लक्ष्य भारत के अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर थे, जो इस महान संग्राम को एक राष्ट्रीय स्वरूप दे सकते थे। 82 वर्षीय बहादुर शाह जफर हालांकि उस समय केवल नाममात्र के साम्राज्य के बादशाह थे परंतु परंपरागत मान्यता के अनुसार वे संपूर्ण भारत के बादशाह थे इसलिए आजादी के इस संग्राम को केंद्रीय नेतृत्व देने के लिए उन्होंने क्रांतिकारियों के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और एक बार फिर से लाल किले से स्वदेशी राज्य स्थापित हो गया। तकनीकी रूप से ब्रिटिश राज भारत से समाप्त हो गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने सहभागिता निभाई। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 08.11.2022

बहादुरशाह जफर ने क्रांति को राष्ट्रव्यापी स्वरूप दिया : डा. अमरदीप

जासं, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी बहादुर शाह जफर के 160वें बलिदान दिवस पर नमन किया गया। आनलाइन कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने 1857 में क्रांति की कमान संभालकर क्रांति को राष्ट्रव्यापी स्वरूप दिया।

डा. अमरदीप ने जानकारी देते हुए बताया कि 10 मई 1857 को अंबाला में क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी राज के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल बजाया और इसी दिन यही कारनामा मेरठ से भारतीय सिपाहियों ने भी किया और मेरठ और अंबाला से ब्रिटिश राज के चिह्न समाप्त किए। इसके बाद क्रांतिकारियों ने दिल्ली का रुख किया और उनका लक्ष्य भारत का मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर था जो इस संग्राम को एक राष्ट्रीय स्वरूप दे सकता था। डा. अमरदीप ने 82 वर्षीय बहादुरशाह जफर हालांकि उस समय केवल नाममात्र के साम्राज्य के बादशाह थे। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार, डा. नरेंद्र सिंह के साथ-साथ अन्य गणमान्य जन भी उपस्थित रहे।

176. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 553rd Guruparv of Guru Nanak Dev on 08.11.2022 and delivered keynote address on “Teachings of Guru Nanak Dev.”

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 09-11-2022

गुरु नानक देव का जीवन मानवता की सच्ची सेवा को समर्पित था : डॉ. अमरदीप

आजादी अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ कॉलेज में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज़ | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में सिख धर्म के संस्थापक और महान समाज सुधारक गुरु नानक देव के 553वें गुरुपर्व के अवसर पर एक विशेष ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि गुरु नानक देव का जीवन मानवता की सच्ची सेवा को समर्पित था। गुरु नानक देव का जीवन और शिक्षाएं सर्वदा हमें सत्कार्यों के लिए प्रेरित करती हैं। उनके त्याग एवं शिक्षाओं ने स्वतंत्रता आन्दोलन में नई जान फूंकी थी और साथ में ही पंजाब में एक बड़ा आन्दोलन खड़ा किया था। एक तरफ जहां लाला लाजपत राय और भगत सिंह जैसे सेनानी और क्रांतिकारी थे, दूसरी और अकाली आन्दोलन ने गुरुद्वारों को लालची महंतों से मुक्त करवाया था। प्रख्यात इतिहासकार, डॉ. गंडा सिंह के अनुसार गुरुद्वारा आंदोलन में 500 सिख मारे गए और 30 हजार को गिरफ्तार किया गया एवं 10 लाख रुपए जुर्माना किया। गुरु नानक की जन्मस्थली ननकाना साहब का महंत नारायण दास एक धोखेबाज और शराबी थे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 09.11.2022

मानवता की सेवा को समर्पित था गुरु नानक का जीवन : अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में मंगलवार को प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में सिख धर्म के संस्थापक और समाज सुधारक गुरु नानक देव के 553वें गुरु पर्व के अवसर पर एक आनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि गुरु नानक देव का जीवन मानवता की सच्ची सेवा को समर्पित था। उनके त्याग एवं शिक्षाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में नई जान डाली। साथ में ही पंजाब में एक बड़ा आंदोलन खड़ा किया था। एक तरफ जहां लाला लाजपत राय और भगत सिंह जैसे सेनानी व क्रांतिकारी थे वहीं दूसरी ओर अकाली आंदोलन ने गुरुद्वारों को लालची महंतों से मुक्त कराया था। प्रख्यात इतिहासकार डा. गंडा सिंह के अनुसार गुरुद्वारा आंदोलन में 500 सिख मारे गए और 30 हजार को गिरफ्तार किया गया। इसके साथ ही 10 लाख रुपये जुर्माने का भुगतान किया गया। गुरु नानक की जन्मस्थली ननकाना साहब का महंत नारायण दास एक धोखेबाज और शराबी प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह अंग्रेजों का चापलूस था। ननकाना साहब को मुक्त कराने का सिखों ने एक बड़ा आंदोलन चलाया और इसी प्रकार अमृतसर के स्वर्ण मंदिर पर एक लंबे संघर्ष के बाद अंत में सरकार ने घुटने टेक दिए। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र ने भी अपने विचार रखे।

177. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 174th Birth Anniversary of great freedom fighter Surendranath Banerjee on 09.11.2022 and delivered keynote address on “Rise of Nationalism in India and Contribution of Surendranath Banerjee.”

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 10.11.2022

राष्ट्रीय आन्दोलन के नींव का पत्थर स्वतंत्रता सेनानी सुरेन्द्रनाथ बनर्जी : डा. अमरदीप

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज मे सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के बारे मे बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणबीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी सुरेंद्र नाथ बनर्जी की 174वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि सुरेंद्र नाथ बनर्जी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की नींव का पत्थर थे। उन्होंने राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हुए संपूर्ण जीवन राष्ट्र के नाम कर दिया था और आजीवन जनता में राष्ट्रवाद के प्रसार एवं संचार में लगे रहे। 10 नवंबर 1848 में कलकत्ता में जन्मे सुरेंद्र नाथ बुद्धिमान विद्यार्थी थे और आइसीएस की कठिन परीक्षा पास करने वाले दूसरे भारतीय थे। लेकिन उन्हें जातीय भेदभाव के चलते और शासन में भारतीयों का पक्ष लेने के चलते ब्रिटिश सरकार ने नौकरी से निकाल दिया था। सीवाई चिंतामणि ने लिखा है कि ब्रिटिश शासन की यह हानि भारत राष्ट्र का लाभ बन गई अन्यथा इतना बड़ा नेता भारत को मिलने से बच जाता है। सुरेंद्र नाथ बनर्जी ने शासन का भारतीयकरण करने के लिए आनंद मोहन बोस के साथ मिलकर जोरदार आंदोलन चलाया। राष्ट्रवाद के प्रसार के लिए उन्होंने इंडियन एसोसिएशन बनाई जो एक तरह से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था बनी। कांग्रेस के दूसरे वार्षिक सत्र में 1886 में उन्हें अध्यक्ष चुना गया। 1905 में बंगाल विभाजन का सबसे मुखर विरोध करने वाले और स्वदेशी आंदोलन की नींव रखने वालों में सुरेंद्र नाथ बनर्जी सबसे आगे थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. रणबीर सिंह आर्य ने कहा कि सुरेंद्र नाथ बनर्जी ने भारत में राष्ट्रवाद के प्रसार के लिए बड़ा आंदोलन चलाया।

अमर उजाला, चरखी दादरी 10.11.2022

स्वतंत्रता सेनानी सुरेंद्रनाथ बनर्जी को किया नमन

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में इतिहास विभाग के तत्वावधान में आयोजित हुआ कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी सुरेंद्रनाथ बनर्जी की 174 वीं जयंती मनाई गई।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि सुरेंद्रनाथ बनर्जी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के नींव का पत्थर थे। उन्होंने राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हुए संपूर्ण जीवन राष्ट्र के नाम कर दिया था और आजीवन जनता में राष्ट्रवाद के प्रसार एवं संचार में लगे रहे।1848 में कलकत्ता में जन्मे सुरेंद्रनाथ अत्यंत बुद्धिमान थे और आईसीएस की कठिन परीक्षा पास करने वाले दूसरे भारतीय थे परंतु उन्हें जातीय भेदभाव के चलते और शासन में भारतीयों का पक्ष लेने के चलते ब्रिटिश सरकार ने नौकरी से निकाल दिया था।

गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय कॉलेज में छात्राओं को जानकारी देते हुए प्रोफेसर अमरदीप। संवाद

सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने शासन का भारतीयकरण करने के लिए आनंदमोहन बोस के साथ मिलकर आंदोलन चलाया। राष्ट्रवाद के प्रसार के लिए उन्होंने इंडियन एसोसिएशन बनाई जो एक तरह से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था बनी। कांग्रेस के दूसरे वार्षिक सत्र 1886 में उन्हें अध्यक्ष चुना गया। 1905 में बंगाल विभाजन का सबसे मुखर विरोध करने वाले और स्वदेशी आंदोलन की नींव रखने वालों में सुरेंद्रनाथ बनर्जी सबसे आगे थे।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य डॉ. रणबीर सिंह आर्य ने कहा कि सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने भारत में राष्ट्रवाद के प्रसार के लिए बड़ा आंदोलन खड़ा किया जो स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से परिलक्षित होता है। भारत में स्वतंत्रता आंदोलन को लेकर उन्होंने नेशन इन दी मेकिंग पुस्तक भी लिखी।

178. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 165th Martyrdom of great freedom fighter & Revolutionary Udami Ram on 10.11.2022 and delivered keynote address on "Revolt of 1857 and Contribution of Revolutionary Udami Ram."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 11.11.2022

1857 के स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन में तब्दील करने में उदमी राम की महत्वपूर्ण भूमिका

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणबीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी उदमीराम के 165वें बलिदान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि उदमी राम 1857 की क्रांति में हरियाणा से संबंध रखने वाला महान योद्धा था। 1822 में हरियाणा के लिबासपुर गांव सोनीपत में जन्मे उदमी राम ने 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन में तब्दील करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1857 का संग्राम प्रारंभ होते ही नंबरदार उदमी राम ने अपने गांव के 50 युवाओं को जोड़कर एक छोटी सेना बनाई। जब 11-12 मई 1857 को अंग्रेज दिल्ली से हारकर पानीपत, अंबाला की तरफ जाने शुरू हुए और इसी दौरान 15 मई 1857 में अंग्रेज सैनिक और महिलाएं दिल्ली से पानीपत अंग्रेजी कैंप में जा रहे थे तभी लिबासपुर के पास उदमी राम और उसकी छोटी सेना ने अंग्रेजों पर आक्रमण किया और अंग्रेज अफसरों और सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। लेकिन अंग्रेज महिलाओं को भारतीय संस्कृति के अनुसार छुआ भी नहीं बल्कि उनकी सुरक्षा करते हुए उन्हें बहालगढ़ की एक ब्राह्मणी के घर छोड़ दिया। यह सारी खबर पूरे इलाके में आग की तरह फैल गई और गांव राठधाना के एक गद्दार सीताराम ने अंग्रेजी सरकार से इनाम के लालच में धोखे से अंग्रेज महिलाओं को डराया कि क्रांतिकारी सबको मारने वाले हैं और अंग्रेजी महिलाओं को बहालगढ़ से रात में निकालकर पानीपत अंग्रेजी कैंप तक पंहुचाया। धीरे धीरे अंगेजी सरकार ने फिर से अपने क्षेत्रों पर अधिकार करना शुरू कर दिया और अंग्रेजी सेना ने गांव लिबासपुर को घेर लिया। शुरुआती झड़पें होने के अंग्रेजों ने स्थानीय लोगों को मारना शुरू कर दिया। अंत में लोगों की रक्षा करने के लिए नंबरदार उदमी राम ने आत्मसमर्पण कर दिया। इतिहास के इस गुमनाम योद्धा पर अंग्रेजो ने कठोर अत्याचार किए और उदमी राम और उसकी पत्नी रत्ना देवी दोनों को राई के विश्राम गृह में पीपल के पेड़ से बांधकर उनके हाथों में लोहे की कीलें ठोंक दी। 30 दिनों के बाद रत्ना देवी ने अपने प्राण त्याग दिए तथा 35 दिनों के संघर्ष के बाद 28 जून 1857 को नंबरदार उदमी राम बलिदान हो गए।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज मे विद्यार्थियो को स्वतंत्रता सेनानी उदमी राम के बारे मे बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

अमर उजाला, झज्जर 11.11.2022

नंबरदार उदमीराम के हाथों में अंग्रेजों ने ठोकी थीं लोहे की कीलें : डॉ. रणवीर

पुण्यतिथि पर बिरहोड़ कॉलेज में हुआ सेमिनार का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

नंबरदार उदमीराम के बारे में जानकारी साझा करते प्राध्यापक। संवाद

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरहोड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी उदमी राम के 165वें शहीदी दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि उदमीराम 1857 की क्रांति में हरियाणा से लोहा लेने वाला महान योद्धा थे। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य ने कहा कि इतिहास के इस गुमनाम योद्धा पर अंग्रेजों ने कठोर अत्याचार किये और उदमी राम और उनकी पत्नी रत्ना देवी दोनों को राई के विश्राम गृह में पीपल के पेड़ से बांधकर उनके हाथों में लोहे की कीलें ठोंक दी थीं। लगभग 30 दिनों के पश्चात रत्ना देवी ने अपने प्राण त्याग दिए और 35 दिन के संघर्ष के बाद 28 जून 1857 को नंबरदार उदमीराम शहीद हो गये परंतु अपने पीछे त्याग और बलिदान की अमिट छाप छोड़ गए। डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1822 में हरियाणा के लिबासपुर गांव, सोनीपत में जन्मे उदमी राम ने 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन में तब्दील करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

1857 का संग्राम प्रारंभ होते ही नंबरदार उदमीराम ने अपने गांव के 50 युवाओं को जोड़कर एक छोटी सी सेना बनाई। प्रसिद्ध हरियाणवी साहित्यकार डॉ. रघुबीर सिंह बांडाहेड़ी के अनुसार यह खबर पूरे इलाके में आग की तरह फैल गई और गांव राठधना के एक गद्दार सीता राम ने अंग्रेजी सरकार से इनाम के लालच में धोखे से अंग्रेज महिलाओं को डराया कि क्रांतिकारी सबको मारने वाले हैं और अंग्रेजी महिलाओं को बहालगढ़ से रात में निकालकर पानीपत अंग्रेजी कैंप तक पहुंचाया। धीरे-धीरे अंग्रेजी सरकार ने फिर से अपने क्षेत्रों पर अधिकार करना शुरू कर दिया और अंग्रेजी सेना ने गांव लिबासपुर को घेर लिया। शुरुआती झड़पें होने के अंग्रेजों ने स्थानीय लोगों को मारना शुरू कर दिया। अंत में लोगों की रक्षा करने के लिए नंबरदार उदमी राम ने आत्मसमर्पण कर दिया।

अमर उजाला, चरखी दादरी 11.11.2022

उदमीराम की छोटी सेना ने खूब छकाया था अंग्रेजों को

बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में इतिहास विभाग की ओर से आयोजित किया गया कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी उदमीराम के 165वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित हुआ।

इसमें डॉ. अमरदीप ने कहा कि उदमीराम 1857 की क्रांति के महान योद्धा थे। 1822 में हरियाणा के लिबासपुर में जन्मे उदमीराम ने 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन में तबदील करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि 1857 का संग्राम प्रारंभ होते ही नंबरदार उदमीराम ने अपने गांव के 50 युवाओं को जोड़कर एक छोटी सी सेना बनाई। जब 11 व 12 मई 1857 को अंग्रेजों ने दिल्ली से हारकर पानीपत व अंबाला की तरफ जाना शुरू किया तो उदमीराम ने अपनी छोटी सी सेना के साथ अंग्रेजों पर आक्रमण किया। उनकी सेना ने अंग्रेज अफसरों और सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया, लेकिन अंग्रेज महिलाओं को भारतीय संस्कृति के अनुसार छूआ तक भी नहीं बल्कि उनकी सुरक्षा की।

बिरोहड़ कॉलेज में छात्राओं को जानकारी देते हुए डॉ. अमरदीप। संवाद

179. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 134th Birth Anniversary of great freedom fighter J.B. Kriplani on 11.11.2022 and delivered keynote address on "J.B. Kriplani and His Contribution of Freedom Struggle."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी
12.11.2022

स्वतंत्रता सेनानी जेबी कृपलानी का जीवन सदैव था राष्ट्र को समर्पित

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में जेबी कृपलानी के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में शुक्रवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी जेबी कृपलानी की 134वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि जेबी कृपलानी आजादी के समय कांग्रेस के अध्यक्ष थे। कृपलानी का जन्म 11 नवंबर 1888 को हैदराबाद सिंध में हुआ था। उनके पिता काका भगवान दास तहसीलदार के पद पर नियुक्त थे। कृपलानी 1912 से 1917 तक बिहार के मुजफ्फरपुर कालेज में अंग्रेजी और इतिहास के प्रोफेसर रहे। असहयोग आंदोलन में विद्यालयों का बहिष्कार करने वाले छात्रों के लिए महात्मा गांधी की प्रेरणा से कई प्रदेशों में विद्यापीठ स्थापित किए थे। जेबी कृपलानी 1920 से 1927 तक गुजरात विद्यापीठ के प्राचार्य रहे। तभी से वे आचार्य कृपलानी के नाम से प्रसिद्ध हुए। महात्मा गांधी के साथ जुड़े तो नौकरी छोड़कर गुजरात और महाराष्ट्र में गांधी की कई आश्रमों की व्यवस्था करने में मदद की। जेबी कृपलानी का जीवन सदैव राष्ट्र को समर्पित रहा।

180. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 134th Birth Anniversary of great freedom fighter Maulana Abul Kalam Azad on 12.11.2022 and delivered keynote address on "Maulana Abul Kalam Azad: An Unforgettable Leader of Modern India."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 13.11.2022

मौलाना अबुल कलाम ने सामुदायिक सौहार्द को माना सर्वोपरिः डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी एवं शिक्षाविद मौलाना अबुल कलाम आजाद की 134वी जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि मौलाना अबुल कलाम आजाद ने आजीवन सांप्रदायिक हितों से बढ़कर राष्ट्र हित को सर्वोपरि माना। अबुल कलाम आजाद का जन्म 11 नवंबर 1888 को मक्का, सऊदी अरब में हुआ था और दो साल बाद इनका परिवार भारत वापस आकर कलकत्ता में बस गया था।

मौलाना आजाद को परंपरागत इस्लामी शिक्षा ग्रहण की और एक शिक्षक के रूप में कलकत्ता में नियुक्त हुए। इसके साथ साथ मौलाना आजाद पर क्रांतिकारी अरबिंदो घोष, श्यामसुंदर चक्रवर्ती इत्यादि का बहुत प्रभाव पड़ा। उनके साथ मिलकर सक्रिय रूप से स्वतंत्रता के लिए क्रांतिकारी एवं राष्ट्रीय संघर्ष में भाग लिया। आजाद ने ध्यान दिया कि क्रांतिकारी गतिविधि बंगाल और बिहार तक ही सीमित थी। इसलिए दो सालों के अंदर मौलाना अबुल कलाम आजाद ने उत्तरी भारत और बंबई भर में गुप्त क्रांतिकारी केंद्रों की स्थापना में मदद की।

गांव विरोहड़ के सरकारी कालेज मे शिक्षाविद मौलाना अबुल कलाम आजाद की 134वी जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

मौलाना आजाद ने बंगाल के विभाजन का विरोध करते हुए सांप्रदायिक अलगाववाद के लिए आल इंडिया मुस्लिम लीग की याचिका को भी खारिज कर दिया था। वे भारत में नस्लीय भेदभाव के सख्त खिलाफ थे। आजादी के समय और बाद में 1947 से 1958 तक केंद्रीय सरकार में शिक्षा मंत्री रहे और 14 वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य करके एक नई क्रांति की शुरुआत की।

****

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 13-11-2022

शिक्षाविद मौलाना अबुलकलाम आजाद की 134वीं जयंती मनाई

आजादी अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं शिक्षाविद मौलाना अबुल कलाम आजाद की 134वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि मौलाना अबुलकलाम आजाद ने आजीवन साम्प्रदायिक हितों से बढ़कर राष्ट्र हित को सर्वोपरी माना। अबुलकलाम आजाद का जन्म 11 नवंबर 1888 को मक्का, सऊदी अरब में हुआ था और दो साल बाद इनका परिवार भारत वापस आकर कलकत्ता में बस गया था। मौलाना आजाद को परंपरागत इस्लामी शिक्षा ग्रहण की और एक शिक्षक के रूप में कलकत्ता में नियुक्त हुए। इसके साथ साथ मौलाना आजाद पर क्रांतिकारी अरबिंदो घोष, श्याम सुन्दर चक्रवर्ती इत्यादि का बहुत प्रभाव पड़ा उनके साथ मिलकर सक्रिय रूप से स्वतंत्रता के लिए क्रांतिकारी एवं राष्ट्रीय संघर्ष में भाग लिया। आजाद ने ध्यान दिया कि क्रांतिकारी गतिविधियों बंगाल और बिहार तक ही सीमित थी, इसलिए दो सालों के अंदर मौलाना अबुल कलाम आजाद ने उत्तरी भारत और बंबई भर में गुप्त क्रांतिकारी केंद्रों की स्थापना में मदद की। मौलाना आजाद ने बंगाल के विभाजन का विरोध करते हुए सांप्रदायिक अलगाववाद के लिए ऑल इंडिया मुस्लिम लीग की याचिका को भी खारिज कर दिया था। वे भारत में नस्लीय भेदभाव के सख्त खिलाफ थे। क्रांतिकारी आन्दोलन को गति देने के लिए 1912 में मौलाना आजाद ने उर्दू भाषा में एक साप्ताहिक समाचार पत्र 'अल-हिलाल' की शुरुवात की जिसमें ब्रिटिश सरकार के खिलाफ और भारतीय राष्ट्रवाद के बारे में लेख छापे जाते थे। इस कारण ब्रिटिश सरकार ने उनकी लेखनी को खतरा मानते हुए भारत रक्षा अधिनियम के तहत अखबार पर प्रतिबंध लगा दिया और इसके बाद मौलाना आजाद को गिरफ्तार करके रांची जेल में डाल दिया गया, जहां उन्हें 1 जनवरी 1920 तक रखा गया। मौलाना आजाद ने खिलाफत आन्दोलन के माध्यम से मुस्लिम समुदाय को जागृत करने का प्रयास किया गया और साथ ही 'असहयोग आन्दोलन' में भाग लेकर सत्याग्रह एवं स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। 1923 में आजाद को कांग्रेस का सबसे कम उम्र में अध्यक्ष बनाया गया। 1928 में मोहम्मद अली जिन्नाह ने 14 सूत्रीय मांगें रखी थी तब उनका विरोध मौलाना आजाद करते हुए राष्ट्रीय हित और धर्मनिरपेक्षता को वरीयता देते हुए मोतीलाल नेहरु की रिपोर्ट के साथ खड़े हुए मिले। 1930 में महात्मा गांधी द्वारा संचालित नमक तोड़ो आन्दोलन में मौलाना आजाद को अन्य नेताओं के साथ गिरफ्तार किया गया, जहां से 1934 में इन्हें जेल से रिहाई मिली। भारत छोड़ो आन्दोलन में भी उन्हें पहले ही महात्मा गांधी, नेहरु, पटेल के साथ गिरफ्तार कर लिया गया था। आजादी के समय और बाद में 1947 से 1958 तक केंद्रीय सरकार में शिक्षा मंत्री रहे और 14 वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य करके एक नई क्रांति की शुरुआत की। साथ ही वयस्क निरक्षरता, माध्यमिक शिक्षा और गरीब एवं महिलाओं की शिक्षा पर बल दिया, एवं वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा पर जोर देते हुए कई यूनिवर्सिटी एवं इंस्टिट्यूट, आईआईटी, आई आई एस सी एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना करके आधुनिक भारत की नींव रखी।

स्वतंत्रता सेनानी के बारे में विचार व्यक्त करते हुए।

181. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 133rd Birth Anniversary of great freedom fighter Jawaharlal Nehru on 14.11.2022 and delivered keynote address on “Role of Jawaharlal Nehru in Freedom Struggle and Making of Modern India.”

09:25

आधुनिक भारत के निर्माता थे जवाहरलाल नेहरु : डा. अमरदीप

झज्जर, 14 नवम्बर (अभीतक) : सोमवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु की 133 वी जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि जवाहरलाल नेहरु आधुनिक भारत के निर्माता थे और स्वतंत्रता आन्दोलन में उनका योगदान अद्वितीय था। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर, 1889 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में हुआ था। उच्च शिक्षा ग्रहण करने के इंग्लैंड गये और 1912 में स्वदेश वापस लौट आए एवं स्वतंतत्रा संग्राम में बढ़ चढक़र हिस्सा लिया। 1916 में लोकमान्य तिलक और ऐनी बीसेंट के होम रुल लीग से जुड़े। 1919 में नेहरू पहली बार गांधी के संपर्क आए और यहीं से उनके राजनीतिक जीवन की शुरुआत हुई। असहयोग आन्दोलन में उन्होंने बढ़चढक़र भाग लिया। 1928 में लखनऊ में साइमन कमीशन के विरोध प्रदर्शन के समय लाठीचार्ज में नेहरू घायल हुए। जवाहर लाल नेहरू ने पहली बार 31 दिसंबर 1929 कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के दौरान भारत की पूर्ण आज़ादी का शंखनाद करके पुरे ब्रिटिश हुकूमत को हिला दिया था और 26 जनवरी 1930 को पुरे भारतवर्ष में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। देश की आजादी के लिए नेहरू कई बार जेल गए परन्तु उनका मनोबल कम नहीं हुआ। 1930 के नमक आंदोलन या 1942 का भारत छोड़ों में भी गिरफ्तार हुए। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में नेहरू जी 9 अगस्त 1942 को मुंबई में गिरफ्तार हुए और अहमदनगर जेल में रहे। वहां से 15 जून 1945 को उन्हें रिहा कर दिया गया। इतिहास प्रोफेसर जितेन्द्र ने कहा कि आज़ादी के समय और बाद में भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए उन्होंने विश्व पटल पर भारत की छवि को बुलन्द किया। निर्गुट आन्दोलन के द्वारा पुरे विश्व को नई विचारधारा दी। वह एक लोकप्रिय राजनेता थे वहीं उनकी कुर्बानी और योगदान दानों को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। बच्चों के विशेष प्रिय चाचा नेहरू के रूप में प्रशिद्ध जवाहर लाल नेहरु हमेशा कहा करते थे कि आज के बच्चे कल के भारत का निर्माण करेंगे, हम जितनी बेहतर तरह से बच्चों की देखभाल करेंगे राष्ट्र निर्माण भी उतना ही बेहतर होगा।

182. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 147th Birth Anniversary of great freedom fighter Birsa Munda on 15.11.2022 and delivered keynote address on “Birsa Munda: A Symbol of Revolt and Freedom.”

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 16-11-2022

आजादी अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

महान स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा की 147वीं जयंती मनाई

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा की 147वीं जयंती के अवसर पर जनजातीय गौरव दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि बिरसा मुंडा का राष्ट्रीय आन्दोलन में अद्वितीय योगदान था। वे जनजातियों के महानायक और महा गौरव थे और उनकी याद में आज सारा देश जनजातीय गौरव दिवस मना रहा है। 15 नवम्बर 1875 में वर्तमान झारखंड में जन्मे बिरसा मुंडा ने अंग्रेजी राज के शोषण चक्र को समझा और इससे मुक्ति दिलाने के लिए अतुलनीय आन्दोलन छेड़ा। बिरसा मुंडा ने न केवल ईसाई धर्म परिवर्तन की गंभीरता को समझा बल्कि वन संसाधनों पर दिकुओं अर्थात विदेशी आधिपत्य का भी घनघोर विरोध किया। इसलिए उन्होंने 24 दिसम्बर 1899 को उल्गुलन, महान विद्रोह, करते हुए ब्रिटिश सरकार की ईंट से ईंट बजा दी थी। बिरसा मुंडा का आन्दोलन मात्र राजनीतिक चेतना का नहीं था अपितु उन्होंने सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जागरण की भी मुहीम छेड़ी थी। जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के आदेशानुसार एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें एमए इतिहास द्वितीय वर्ष की लड़कियों ने बाजी मारी। प्रथम स्थान पर रितु, द्वितीय स्थान सोनू और तृतीय स्थान पर पूजा रही। इस अवसर पर ओमबीर, पवन कुमार, सवीन, जितेन्द्र, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह, और डॉ. राजपाल इत्यादि उपस्थित रहे।

छात्रों को संबोधित करते हुए आयोजक।

झज्जर-बहादुरगढ़ • बुधवार • 16.11.2022
04

अमर उजाला, झज्जर 16.11.2022

'बिरसा मुंडा ने जमकर लिया अंग्रेजों से लोहा'

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में जयंती पर स्वतंत्रता सेनानी को किया याद, व्याख्यान में विद्यार्थियों को दी जानकारी

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ रणबीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा की 147 वीं जयंती मनाई गई।

इस अवसर पर जनजातीय गौरव दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि बिरसा मुंडा का राष्ट्रीय आंदोलन में अद्वितीय योगदान था। वे जनजातियों के महानायक और महागौरव थे और उनकी याद में आज सारा देश जनजातीय गौरव दिवस मना रहा है। 15 नवम्बर 1875 में वर्तमान झारखंड में जन्मे बिरसा मुंडा ने अंग्रेजी राज के शोषण चक्र को समझा और इससे मुक्ति दिलाने के लिए अतुलनीय आन्दोलन छेड़ा।

जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के आदेशानुसार एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें एमए इतिहास द्वितीय वर्ष की लड़कियों ने बाजी मारी। प्रथम स्थान पर रितु, द्वितीय स्थान मोनू और तृतीय स्थान पर पूजा रही। इस अवसर पर ओमबीर, पवन कुमार, सवीन, जितेंद्र, डॉ अजय कुमार, अजय सिंह, और डॉ राजपाल इत्यादि उपस्थित रहे।

राजकीय महाविद्यालय में व्याख्यान देते हुए वक्ता। संवाद

छात्राओं को बिरसा मुंडा की जानकारी देती वक्ता। संवाद

गांव बहू के राजकीय महाविद्यालय में मानचित्र भरतीं छात्राएं। संवाद

मानचित्र भरो प्रतियोगिता में रीतिका को मिला प्रथम स्थान

साल्हावास। क्षेत्र के गांव बहू स्थित राजकीय महाविद्यालय के भूगोल विभाग के तत्वाधान में मानचित्र भरो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया व अपने मानचित्र भरने के कौशल का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रीतिका तृतीय वर्ष से, दूसरे स्थान पर नवीन द्वितीय वर्ष से और तीसरे स्थान पर सवीता तृतीय वर्ष से रही। इस प्रतियोगिता का संचालन भूगोल विभागाध्यक्ष डॉ पंकज भारद्वाज, पूजा शर्मा व प्रो रेखा बाई के नेतृत्व में हुआ। महाविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी डॉ जितेंद्र भारद्वाज ने इस प्रतियोगिता में बढ़कर हिस्सा लेने पर छात्राओं को प्रशंसा की। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ रणबीर सिंह आर्य ने अपने संदेश के माध्यम से विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी व भूगोल विभाग द्वारा समय-समय पर इस प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित करवाने पर प्रशंसा की। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित थे। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 16.11.2022

भाषण स्पर्धा में रितू रही प्रथम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा की 147वीं जयंती के अवसर पर जनजातीय गौरव दिवस मनाया गया। इस मौके पर भाषण स्पर्धा भी आयोजित की गई जिसमें रितू ने बाजी मारी।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि बिरसा मुंडा का राष्ट्रीय आंदोलन में अद्वितीय योगदान था। वे जनजातियों के महानायक थे। 15 नवंबर 1875 में वर्तमान झारखंड में जन्मे बिरसा मुंडा ने अंग्रेजी राज के शोषण चक्र को समझा और इससे मुक्ति दिलाने के लिए आंदोलन छेड़ा। बिरसा मुंडा ने न केवल ईसाई धर्म परिवर्तन की गंभीरता को समझा बल्कि विदेशी आधिपत्य का भी जोरदार विरोध किया। उन्होंने 24 दिसंबर 1899 को विद्रोह करते हुए ब्रिटिश सरकार की ईंट से ईंट बजा दी थी। बिरसा मुंडा का आंदोलन मात्र राजनीतिक चेतना का नहीं था अपितु उन्होंने सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जागरण की भी मुहिम छेड़ी थी। इस दौरान भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। जिसमें रितू प्रथम स्थान, मोनू द्वितीय और पूजा तृतीय स्थान पर रही। इस अवसर पर ओमबीर, पवन कुमार, सवीन, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह व डॉ. राजपाल आदि उपस्थित रहे।

राजकीय कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में विचार रखते हुए सहायक प्रोफेसर। संवाद

183. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 165th Martyrdom of great freedom fighter Uda Devi on 16.11.2022 and delivered keynote address on "Rise of Nationalism in India and Contribution of Surendranath Banerjee."

अमर उजाला, झज्जर 17.11.2022

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में वीरांगना ऊदा देवी का रहा अद्वितीय योगदान

पति की मौत के बाद अकेले ही निकल पड़ी थीं पुरुष वेश में, 36 ब्रिटिश सैनिकों को उतारा था मौत के घाट

संवाद न्यूज एजेंसी

बिरोहड़ महाविद्यालय में ऊदा देवी के योगदान पर व्याख्यान देते वक्ता। संवाद

झज्जर। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी वीरांगना ऊदा देवी के 165 वें शहीदी दिवस के अवसर पर कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में वीरांगना ऊदा देवी ने 36 ब्रिटिश सैनिकों को मौत के घाट उतार कर इतिहास में अपना नाम अमर किया था।

आजादी के इतिहास में 1857 के संग्राम का अद्वितीय योगदान है और इस संग्राम ने क्रांतिकारियों और सेनानियों को राष्ट्र के लिए कुर्बान होने के लिए सदैव प्रेरित किया। ऐसी ही एक वीरांगना ऊदा देवी थी जो लखनऊ के पास उजारियांव गांव में पैदा हुई थी। उनके पति मक्का पासी अवध के नवाब वाजिद अली शाह की सेना में एक सैनिक थे। ऊदा देवी की नियुक्ति महिला टुकड़ी में हुई और कुछ ही दिनों बाद में ऊदा देवी को बेगम हजरत महल की महिला सेना की टुकड़ी का कमांडर बना दिया गया।

1857 के संग्राम के मद्देनजर लखनऊ की घेराबंदी के समय लगभग 2000 भारतीय सिपाहियों को ब्रिटिश फौज ने शरणस्थल सिकंदर बाग पर घेर लिया। 16 नवंबर 1857 को बाग में शरण लिए 2000 भारतीय सिपाहियों का ब्रिटिश फौजों द्वारा संहार कर दिया गया था। अंग्रेजों ने ऊदा देवी पासी के पति मक्का पासी को भी मार दिया। उसके पश्चात, ऊदा देवी अंग्रेजों से बदला लेने के लिए पुरुष का वेश धारण कर अकेले ही निकल पड़ीं। इस विशेष कार्यक्रम में जितेंद्र, पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

ऊदा देवी के कारनामों से कांपती थी अंग्रेजी हुकूमत

गांव बहु स्थित राजकीय महाविद्यालय में इतिहास विभाग की तरफ से ऊदा देवी पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता और संयोजक इतिहास विभाग के प्राध्यापक नरेंद्र कुमार रहे। महाविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी डॉ. मोहन कुमार ने बताया कि क्रांतिकारी ऊदा देवी सिकंदर बाग के उद्यान में स्थित पीपल के एक बड़े पेड़ की ऊपरी शाखा पर बैठीं थीं, जिसने अंग्रेजी सेना के लगभग बत्तीस सिपाही और अफसर मारे थे। उन्हें इसकी प्रेरणा अपने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पति मक्का पासी से प्राप्त हुई थी। 10 जून 1857 को लखनऊ के चिनहट कस्बे के निकट इस्माइलगंज में हेनरी लॉरेंस के नेतृत्व में ईस्ट इंडिया कंपनी की फौज के साथ मौलवी अहमद उल्लाह शाह की अगुवाई में संगठित, विद्रोही सेना की ऐतिहासिक लड़ाई में मक्का पासी वीरगति को प्राप्त हुए थे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 17.11.2022

वीरांगना उदा देवी ने 36 ब्रिटिश सैनिकों को मौत के घाट उतारा

बिरोहड स्थित कॉलेज में विद्यार्थियों का जानकारी देते हुए सहायक डॉ. अमरदीप। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

वीरांगना उदा देवी के 165वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी वीरांगना उदा देवी के 165वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में वीरांगना उदा देवी ने 36 ब्रिटिश सैनिकों को मौत के घाट उतारकर इतिहास में अपना नाम अमर किया था। उन्होंने कहा कि आजादी के इतिहास में 1857 के संग्राम का अद्वितीय योगदान है। इस संग्राम ने क्रांतिकारियों और सेनानियों को राष्ट्र के लिए कुर्बान होने के लिए सदैव प्रेरित किया। ऐसी ही एक वीरांगना उदा देवी थीं जो लखनऊ के पास उजिरियांव गांव में पैदा हुई थीं। उनके पति मक्कापासी अवध के नवाब वाजिद अली शाह की सेना में एक सैनिक थे। उदा देवी की नियुक्ति महिला टुकड़ी में हुई और कुछ ही दिनों बाद में उदा देवी को बेगम हजरत महल की महिला सेना की टुकड़ी का कमांडर बना दिया गया। कार्यक्रम में जितेंद्र, पवन कुमार आदि उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 16.11.2022

छात्र व शिक्षकों ने मनाई स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा की जयंती

स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा के बारे में बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति

चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में मंगलवार को प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा की 147वी जयंती मनाई गई। संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि बिरसा मुंडा का राष्ट्रीय आंदोलन में अद्वितीय योगदान था। जन जातीय गौरव दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली के आदेशानुसार भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें एमए इतिहास द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने बाजी मारी। प्रथम स्थान पर रितु, द्वितीय स्थान सोनू और तृतीय स्थान पर पूजा रही। इस अवसर पर ओमवीर, पवन कुमार, सवीन, जितेंद्र, डा. अजय कुमार, अजय सिंह और डा. राजपाल इत्यादि भी उपस्थित रहे। (जासं)

184. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 122nd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Padmaja Naidu on 17.11.2022 and delivered keynote address on "Role and Contribution of Padmaja Naidu in Freedom Struggle."

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 18-11-2022

स्वतंत्रता सेनानी पद्मजा नायडू की 122वीं जयंती मनाई

आजादी अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी पद्मजा नायडू की 122वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि पद्मजा नायडू ने 21 वर्ष की आयु में निजाम शासित हैदराबाद रियासत में कांग्रेस की सह संस्थापक बनी। पद्मजा नायडू का जन्म 17 नवंबर 1900 में हैदराबाद में हुआ था। उनके पिता का नाम डॉ. एम गोविंद राजलु नायडू तथा उनकी माता का नाम सरोजिनी नायडू जो कि सुप्रसिद्ध

स्वतंत्रता सेनानी पद्मजा नायडू की 122वीं जयंती पर विचार व्यक्त करते हुए शिक्षक।

कवयित्री और भारत देश के सर्वोत्तम राष्ट्रीय नेताओं में से एक थी। सरोजिनी नायडू की बेटी पद्मजा अपनी मां की तरह ही देश के लिए समर्पित थी और इसलिए वे कांग्रेस की गतिविधियों से जुड़ गयी थी। हैदराबाद रियासत में उन्होंने राष्ट्रीय जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पद्मजा नायडू ने विदेशी सामानों के बहिष्कार करने और खादी को अपनाने के लिए लोगों को प्रेरित करने का संदेश दिया। 1942 में जब महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' शुरू किया, तब उस आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें जेल जाना पड़ा। भारत की आजादी के बाद वह संसद की सदस्य बनीं और बाद में पश्चिम बंगाल की पहली महिला राज्यपाल बनाई गई। राष्ट्र के लिए उनकी सेवाएं एवं विशेष रूप से उनका मानवीय दृष्टिकोण हमेशा याद किया जाएगा।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 18.11.2022

पदमजा नायडू ने 21 वर्ष की आयु में हैदराबाद रियासत में राष्ट्रवाद की भावना का किया प्रसार

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज मे स्वतंत्रता सेनानी पद्मजा नायडू के बारे मे बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : 17 नवंबर को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी पदमजा नायडू की 122वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि पदमजा नायडू ने 21 वर्ष की आयु में निजाम शासित हैदराबाद रियासत में कांग्रेस की सह संस्थापक बनी। पदमजा नायडू का जन्म 17 नवंबर, 1900 में हैदराबाद में हुआ था। उनके पिता का नाम डा. एम गोविंदराजलु नायडू तथा उनकी माता का नाम सरोजिनी नायडू जो कि सुप्रसिद्ध कवयित्री और भारत देश के सर्वोत्तम राष्ट्रीय नेताओं में से एक थीं।

सरोजिनी नायडू की बेटी पदमजा अपनी मां की ही तरह देश के लिए समर्पित थीं और इसलिए वे कांग्रेस की गतिविधियों से जुड़ गयी थी। हैदराबाद रियासत में उन्होंने राष्ट्रीय जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पदमजा नायडू ने विदेशी सामानों के बहिष्कार करने और खादी को अपनाने के लिए लोगों को प्रेरित करने का संदेश दिया। 1942 में जब महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया तब उस आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें जेल जाना पड़ा। भारत की आजादी के बाद वह संसद की सदस्य बनीं और बाद में पश्चिम बंगाल की पहली महिला राज्यपाल बनायी गई। राष्ट्र के लिए उनकी सेवाएं एवं विशेष रूप से उनका मानवीय दृष्टिकोण हमेशा याद किया जाएगा।

185. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 112th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter & Revolutionary Batukeshwar Dutt on 18.11.2022 and delivered keynote address on "Contribution of Batukeshwar Dutt in Revolutionary Movement."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 19.11.2022

राष्ट्र को समर्पित था क्रांतिकारी आंदोलन के योद्धा बटुकेश्वर दत्त का समस्त जीवन : डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : शुक्रवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी बटुकेश्वर दत्त के 112वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि बटुकेश्वर दत्त का जीवन राष्ट्र का समर्पित था और वे क्रांतिकारी आंदोलन के अविस्मरणीय योद्धा थे। जिन्होंने ब्रिटिश तानाशाही और अन्याय के खिलाफ अपना पूरा जीवन न्यौछावर कर दिया।

18 नवंबर 1910 को जन्मे बटुकेश्वर दत्त ने स्नातक स्तरीय शिक्षा पीपीएन कालेज कानपुर में पूरी की और इसी दौरान कानपुर में ही उनकी मुलाकात चंद्रशेखर आजाद से हुई। जहां से उनके जीवन का एक ही लक्ष्य बन गया कि भारत को आजादी दिलानी है। साल 1924 में कानपुर में ही इनकी भगत सिंह से भेंट हुई। हिंदुस्तान सोशलिस्ट एसोसिएशन के लिए कानपुर में कार्य करना प्रारंभ किया और बम बनाना भी सीखा।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में बटुकेश्वर दत्त के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

8 अप्रैल 1929 का दिन भारत के इतिहास में एक काला दिन था जब मजदूरों के हितों को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश सरकार पब्लिक सेफ्टी बिल पेश करने जा रही थी। इस साम्राज्यवादी सरकार को भारतीयों की आवाज सुनाने के लिए बटुकेश्वर दत्त और भगत सिंह ने सेंट्रल एसेंबली में बम फेंका और पर्चे भी डाले। जिसमें लिखा था कि बहरी सरकार को सुनाने के लिए धमाके की आवश्यकता होती है। इस बम से किसी को कोई ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचा था हालांकि बाद में फोरेंसिक रिपोर्ट ने ये साबित कर दिया कि बम इतने शक्तिशाली नहीं थे। इस मौके पर महाविद्यालय के अन्य स्टाफ सदस्य भी मौजूद रहे।

अमर उजाला, झज्जर 19.11.2022

'बटुकेश्वर दत्त का जीवन राष्ट्र को समर्पित'

राजकीय महाविद्यालय में जयंती पर उनके जीवन परिचय पर प्रकाश डाला

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी बटुकेश्वर दत्त के 112 वें जन्मदिन के उपलक्ष्य पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि बटुकेश्वर दत्त का जीवन राष्ट्र का समर्पित था और वे क्रांतिकारी आंदोलन के अविस्मर्णीय योद्धा थे जिन्होंने ब्रिटिश तानाशाही और अन्याय के खिलाफ अपना पूरा जीवन न्योछावर कर दिया। 18 नवंबर 1910 को जन्में बटुकेश्वर दत्त ने स्नातक स्तरीय शिक्षा पी.पी.एन. कॉलेज कानपुर में पूरी की और इसी दौरान कानपुर में ही उनकी मुलाकात चंद्रशेखर आजाद से हुई।

8 अप्रैल 1929 का दिन भारत के इतिहास में एक काला दिन था जब मजदूरों के हितों को समाप्त करने लिए ब्रिटिश सरकार पब्लिक सेफ्टी बिल पेश लाने जा रही थी। इस साम्राज्यवादी सरकार को भारतियों की आवाज सुनाने के लिए बटुकेश्वर दत्त और भगत सिंह ने सेंट्रल असेंबली में बम फैंका और पर्चे भी फेंके, जिसमे लिखा था कि बहरी सरकार को सुनाने के धमाके की आवश्यकता होती है।

बटुकेश्वर दत्त को इस केस में काला पानी का सजा मिली परन्तु फांसी न मिलने से उन्हें बहुत दुखी हुए थे। 1942 में महात्मा गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े और उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया गया। तीन साल बाद 1945 में वे रिहा हुए। 1965 में भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु पर बनी शहीद फिल्म की कहानी बटुकेश्वर दत्त ने ही लिखी थी जो बहुत सफल रही।

स्वतंत्रता सेनानी बटुकेश्वर दत्त के बारे में जानकारी देते प्रवक्ता। संवाद

186. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 192nd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Jhalkari Bai on 22.11.2022.

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 23-11-2022

1857 के संग्राम की क्रांतिकारी वीरांगना झलकारी बाई की 192वीं जयंती मनाई

अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज़ | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 1857 के महान संग्राम की क्रांतिकारी वीरांगना झलकारी बाई की 192वीं जयंती के अवसर पर ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि 1857 के महान संग्राम में जब झांसी को ब्रिटिश फौजों ने चारों ओर से घेर लिया था, तब झलकारी बाई ने रानी लक्ष्मीबाई का भेष बदलकर अंग्रेजों को टक्कर देते हुए वीरता और शौर्य का अद्भुत प्रदर्शन किया। रानी लक्ष्मीबाई और उसके पुत्र की रक्षा करते हुए उन्हें झांसी से सुरक्षित निकालने के लिए झलकारी बाई ने अंग्रेजी सेनाओं को खूब छकाया। इस महान वीरांगना का जन्म 22 नवंबर 1830 को झांसी के नजदीक भोजला ग्राम में हुआ था। झलकारी बाई के पति पूर्णसिंह झांसी की सेना में तोपची थे। रानी लक्ष्मीबाई की महिला टुकड़ी में भर्ती होने पर शीघ्र ही झलकारी बाई रानी लक्ष्मीबाई की विशेष सलाहकार एवं महिला सेना की सेनापति बनी। 1857 के विद्रोह के समय जनरल रोज ने अपनी विशाल सेना के साथ 23 मार्च 1858 को झांसी पर आक्रमण किया। कई दिनों तक रानी ने वीरतापूर्वक अपने 5000 के सैन्य दल से उस विशाल सेना का सामना किया।

रानी लक्ष्मीबाई कालपी में पेशवा द्वारा सहायता की प्रतीक्षा कर रही थी, लेकिन उन्हें कोई सहायता नहीं मिल सकी क्योंकि तात्या टोपे जनरल रोज से पराजित हो चुके थे। जल्द ही अंग्रेज फौज झांसी में घुसने वाली थी और तब झलकारीबाई ने रानी लक्ष्मीबाई के प्राणों को बचाने के लिए एक योजना तैयार की और स्वयं को रानी लक्ष्मीबाई बताते हुए लड़ने का फैसला किया, इस तरह झलकारीबाई ने पूरी अंग्रेजी सेना को अपनी तरफ आकर्षित कर लिया। इस तरह झलकारीबाई खुद को रानी बताते हुए लड़ती रही और जनरल रोज की सेना भी झलकारी बाई को ही रानी समझकर उन पर प्रहार करती रही, तब तक रानी लक्ष्मीबाई झांसी से सुरक्षित निकल चुकी थी। परन्तु बाद में झलकारीबाई के वास्तविक स्वरुप का पता अंग्रेजों का चल गया और 18 जून 1858 को रानी लक्ष्मीबाई लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुई। इस प्रकार झलकारी बाई ने झांसी और रानी लक्ष्मीबाई के प्रति अपना कर्तव्य पूर्ण निष्ठा से पूरा किया। झलकारी बाई का जीवन और विशेष रूप से ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ उनके लड़ने की कला को बुन्देलखंड ही नहीं बल्कि पूरा भारत हमेशा याद रखेगा। भारत सरकार ने झलकारीबाई के योगदान को नमन करते हुए उनके नाम का पोस्ट और टेलीग्राम स्टेंप भी जारी किया है। इस अवसर पर प्रोफेसर पवन कुमार और जितेन्द्र उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 23.11.2022

1857 की क्रांति में झलकारी बाई ने अंग्रेजों को दी थी कड़ी टक्कर

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में 1857 के संग्राम की क्रांतिकारी वीरांगना झलकारी बाई की 192वी जयंती पर आनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि 1857 के संग्राम में जब झांसी को ब्रिटिश फौजों ने चारों ओर से घेर लिया था तब झलकारी बाई ने रानी लक्ष्मीबाई का भेष बदलकर अंग्रेजों को टक्कर देते हुए अपनी वीरता का परिचय दिया था। रानी लक्ष्मीबाई और उसके पुत्र की रक्षा करते हुए उन्हें झांसी से सुरक्षित निकालने के लिए झलकारी बाई ने अंग्रेजी सेनाओं को खूब छकाया था। इस महान वीरांगना का जन्म 22 नवंबर 1830 को झांसी के नजदीक भोजला गांव में हुआ था। रानी लक्ष्मीबाई की महिला टुकड़ी में भर्ती होने पर शीघ्र ही झलकारी बाई रानी लक्ष्मीबाई की विशेष सलाहकार एवं महिला सेना की सेनापति बनी। 1857 के विद्रोह के समय जनरल रोज ने अपनी विशाल सेना के साथ 23 मार्च 1858 को झांसी पर आक्रमण किया। कई दिनों तक रानी ने वीरतापूर्वक अपने 5000 के सैन्य दल से उस विशाल सेना का सामना किया। सरकार ने उनेके योगदान को याद कर उनके नाम का पोस्ट भी जारी किया है। इस अवसर पर पवन कुमार, जितेंद्र इत्यादि ने भी अपने विचार रखे।

187. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 132nd Death Anniversary of Great Freedom Fighter & Social Reformer Mahatma Jyotiba Phule on 28.11.2022 and delivered keynote address on “Making the Sense of Reform to Weaker Sections of Indian Society and Jyotiba Phule.”

अमर उजाला, चरखी दादरी 29.11.2022

स्वतंत्रता सेनानी ज्योतिबा फुले को किया नमन

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में महान समाज सुधारक एवं स्वतंत्रता सेनानी ज्योतिबा फुले की 132वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि ज्योतिबा फुले 19वीं सदी के एक महान समाज सुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक और क्रांतिकारी कार्यकर्ता थे।

उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन महिलाओं को शिक्षा का अधिकार दिलाने और बाल विवाह को बंद कराने में लगा दिया। फुले समाज की कुप्रथा, अंध श्रद्धा की जाल से समाज को मुक्त करवाकर आधुनिक एवं समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे। ज्योतिबा फुले का जन्म 1827 में पुणे में हुआ था। ज्योतिबा ने कुछ समय पहले तक मराठी में अध्ययन किया, बीच में पढ़ाई छूट गई और बाद में 21 वर्ष की उम्र में अंग्रेजी की सातवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की। उनका विवाह 1840 में सावित्री बाई से हुआ, जो बाद में स्वयं एक प्रसिद्ध समाजसेवी बनीं। दलित व स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में दोनों पति-पत्नी ने मिलकर काम किया। कार्यक्रम में इतिहास के प्रोफेसर जितेंद्र ने भी अपने विचार रखे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 29.11.2022

आधुनिक समाज की स्थापना ही था ज्योतिबा फुले का ध्येय

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में सोमवार को स्वतंत्रता सेनानी ज्योतिबा फुले की 132वीं पुण्यतिथि के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि ज्योतिबा फुले 19वीं सदी के एक महान समाजसुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक तथा क्रांतिकारी कार्यकर्ता थे। इन्हें महात्मा फुले ज्योतिबा फुले के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार दिलाने, बाल विवाह को बंद कराने में लगा दिया। फुले समाज की कुप्रथा, अंध श्रद्धा की जाल से समाज को मुक्त कराके आधुनिक एवं समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे। ज्योतिबा फुले का जन्म 1827 ई. में पुणे में हुआ था। ज्योतिबा ने कुछ समय पहले तक मराठी में अध्ययन किया और बीच में पढ़ाई छूट गई। बाद में 21 वर्ष की उम्र में अंग्रेजी की सातवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की। इनका विवाह 1840 में सावित्री बाई से हुआ जो बाद में स्वयं एक प्रसिद्ध समाजसेवी बनीं। दलित व स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में दोनों ने मिलकर काम किया। महात्मा ज्योतिबा फुले ने साल 1848 में लड़कियों के लिए देश का पहला महिला स्कूल खोलकर एक नई शिक्षा क्रांति का शंखनाद किया। पुणे में खोले गए स्कूल में उनकी पत्नी सावित्री बाई पहली शिक्षिका बनीं। 28 नवंबर 1890 को इनका निधन हो गया।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज मे स्वतंत्रता सेनानी ज्योतिबा फुले के बारे मे बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति

के लिए आगे अ... दोपहर 2 बजे ... करीब 150 बच... ने भाग लिया।

...ा के दौरान ...ायक के रूप में ...टेक्निक कॉलेज ...होंगे। प्रतियोगिता

अमर उजाला, झज्जर 29.11.2022

कार्यक्रम | राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में ज्योतिबा फुले की पुण्यतिथि पर सेमिनार का आयोजन

'समतामूलक समाज की स्थापना था ज्योतिबा फुले का ध्येय'

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान समाज सुधारक एवं स्वतंत्रता सेनानी ज्योतिबाफुले की 132 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि ज्योतिबा फुले 19वीं सदी के एक महान समाजसुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी लेखक, दार्शनिक और क्रांतिकारी थे। इन्हें महात्मा फुले एवं ज्योतिबा फुले के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन महिलाओं को शिक्षा का अधिकार दिलाने, बाल विवाह को बंद कराने में लगा दिया। ज्योतिबा ने कुछ समय पहले तक मराठी में अध्ययन किया, बीच में पढ़ाई छूट गई और बाद में 21 वर्ष की उम्र में अंग्रेजी की सातवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की। इनका विवाह 1840 में सावित्री बाई से हुआ, जो बाद में स्वयं एक प्रसिद्ध समाजसेवी बनीं।

ज्योतिबा फुले पर व्याख्यान देते हुए डॉ. अमरदीप सिंह। संवाद

ज्योतिबा फुले ने दलितों और वंचितों को न्याय दिलाने एवं सामाजिक परिवर्तन के आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए 24 सितंबर 1873 को सत्यशोधक समाज की स्थापना की। ज्योतिराव फुले को उनकी समाज सेवा से प्रभावित होकर 1888 में मुंबई की एक सभा में महात्मा की उपाधि से नवाजा गया।

28 नवंबर 1890 को यह महान समाज सुधारक इस दुनिया को छोड़कर चले गए परंतु अपने पीछे आधुनिक भारत एवं समतामूलक समाज की स्थापना का सशक्त आंदोलन छोड़ गये। इस अवसर पर इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र इत्यादि उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 30-11-2022

स्वतंत्रता सेनानी ज्योतिबा फुले की 132 वीं पुण्यतिथि मनाई

झज्जर | राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान समाज सुधारक एवं स्वतंत्रता सेनानी ज्योतिबा फुले की 132 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि ज्योतिबा फुले 19वीं सदी के एक महान समाजसुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक तथा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। इन्हें महात्मा फुले एवं ''जोतिबा फुले के नाम से भी जाना जाता है। इस अवसर पर इतिहास प्रोफेसर जितेन्द्र उपस्थित रहे।

188. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 197th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Matadin Hela on 29.11.2022 and delivered keynote address on "Matadin Hela: Unknown Warrior of Revolt of 1857 Revolt."

अमर उजाला, चरखी दादरी 30.11.2022

मातादीन हेला ने मंगल पांडे को दी थी चर्बी वाले कारतूसों की सूचना : डॉ. अमरदीप

गांव बिरोहड़ में राजकीय कॉलेज में छात्रों को जानकारी देते हुए प्रोफेसर। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक मातादीन हेला के जन्मदिवस पर आयोजन

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों ने दी श्रद्धांजलि

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक मातादीन हेला के 197वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि मातादीन हेला 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी जलाने वालों में अग्रणी थे। अगर मातादीन नहीं होते तो चर्बी वाले कारतूसों की सूचना किसी को नहीं मिल पाती और न मंगल पांडे का विद्रोह होता। उन्होंने कहा कि 29 नवंबर 1825 को संयुक्त प्रांत में जन्मे मातादीन हेला बैरकपुर छावनी में ब्रिटिश सरकार की नौकरी करते थे जहां चर्बी वाले कारतूस बनते थे। मातादीन ने मंगल पांडे को चेताया कि चर्बी वाले कारतूसों से हिंदू और मुसलमान दोनों का धर्म भ्रष्ट हो जाएगा। मातादीन की इस जानकारी के बाद मंगल पांडे ने चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार किया और 29 मार्च 1857 को विद्रोह कर दिया। कार्यक्रम में इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र व डॉ. नरेंद्र सिंह भी उपस्थित रहे।

अमर उजाला, झज्जर 30.11.2022

स्वतंत्रता सेनानी मातादीन हेला को किया याद

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक मातादीन हेला के 197 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि मातादीन हेला 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी जलाने वाले प्रथम व्यकित थे जिन्होंने मंगल पांडे को क्रांति के लिए ललकारा था। अगर मातादीन हेला नही होते तो चर्बी वाले कारतूसों की सूचना किसी को नही मिल पाती और न मंगल पांडे का विद्रोह होता और न 10 मई को इस महान क्रांति की शुरुआत हो पाती। मंगल पांडे ने चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार किया और 29 मार्च 1857 को विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह की ज्वाला मातादीन से प्रारम्भ होकर, मंगल पांडे से होती सारे भारत में फैल गई। जिसके लिए बाद में मातादीन हेला को फांसी दी गई। इस कार्यक्रम में इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र, डॉ नरेंद्र सिंह इत्यादि उपस्थित रहे। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 30.11.2022

मातादीन हेला स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी जलाने वाले प्रथम व्यक्ति

गांव बिरोहड़ के राजकीय कालेज में छात्रों को संबोधित करते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक मातादीन हेला के 197 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि मातादीन हेला 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी जलाने वाले प्रथम व्यक्ति थे। जिन्होंने मंगल पांडे को क्रांति के लिए ललकारा था। अगर मातादीन भंगी नही होते तो चर्बी वाले कारतूसों की सूचना किसी को नही मिल पाती और न मंगल पांडे का विद्रोह होता और न 10 मई को इस महान क्रांति की शुरुआत हो पाती। 29 नवम्बर 1825 को सयुंक्त प्रांत में जन्मे मातादीन हेला बैरकपुर छावनी में ब्रिटिश सरकार की नौकरी करते थे। जहां चर्बी वाले कारतूस बनते थे। जब मंगल पांडे से उनका पानी का लौटा मांगा तो मातादीन ने उनको चेताया कि चर्बी वाले कारतूसों ने हिन्दू और मुसलमान दोनों का धर्म भ्रष्ट हो जाएगा। तब इस लोटा का क्या करोगे। इसी घटना को कैप्टन राइट ने मेजर बोंटिन को 22 जनवरी 1857 को लिखे पत्र में भी उद्दृत किया था। मातादीन की इस जानकारी के बाद मंगल पांडे ने चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार किया और 29 मार्च 1857 को विद्रोह कर दिया।

189. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 134th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Gaindalal Dikhsit on 30.11.2022 and delivered keynote address on "Gaindalal Dikhsit: Unknown Hero of Freedom Struggle."

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 01-12-2022

गुमनाम नायक गेंदालाल दीक्षित की 134वीं जयंती मनाई

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज़ | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक गेंदालाल दीक्षित की 134वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि गेंदालाल दीक्षित ने ब्रिटिश पुलिस थानों पर डकैती डालकर हथियार लुटकर अंग्रेजी सरकार को हिला दिया था। चम्बल के बीहड़ों में स्वतंत्रता का शंखनाद करने वाले गेंदालाल दीक्षित का जन्म 30 नवंबर 1888 को जिला आगरा, उत्तर प्रदेश की तहसील बाह के मई नामक गांव में हुआ था। शिक्षा पूरी करने के बाद वे उत्तर प्रदेश में औरैया जिले की डीएवी विद्यालय में अध्यापक नियुक्त हो गए थे। 1905 में बंगाल विभाजन के परिणामस्वरूप देशव्यापी 'स्वदेशी आन्दोलन' ने उन्हें अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने 'शिवाजी समिति' के नाम से डाकुओं का एक संगठन बनाया और शिवाजी की भांति छापामार युद्ध करके अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध उत्तर प्रदेश में एक अभियान प्रारम्भ किया। गेंदालाल दीक्षित भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम योद्धा, महान क्रान्तिकारी व उत्कट राष्ट्रभक्त थे, जिन्होंने सामान्य जन के साथ साथ, डाकुओं तक को संगठित करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खड़ा करने का महान कार्य किया। दीक्षित \'उत्तर भारत के क्रांतिकारियों के द्रोणाचार्य\' कहे जाते थे। क्रांतिकारी गेंदालाल दीक्षित ने चंबल के एक डकैत गैंग के साथ मिलकर उत्तर प्रदेश के हथकान पुलिस थाने में डकैती डाली। इसमें 21 अंग्रेज पुलिस कर्मी मारे गए थे। इस कार्यक्रम में इतिहास प्रोफेसर जितेन्द्र, भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार उपस्थित रहे।

छात्रों को संबोधित करते हुए शिक्षक।

अमर उजाला, चरखी दादरी 01.12.2022

गेंदालाल दीक्षित ने हथियार लूटकर अंग्रेजी सरकार को हिला दिया था : अमरदीप

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक गेंदालाल दीक्षित की 134वीं जयंती मनाई गई।

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि गेंदालाल दीक्षित ने ब्रिटिश पुलिस थानों पर डकैती कर हथियार लूटकर अंग्रेजी सरकार को हिला दिया था। चंबल के बीहड़ों में स्वतंत्रता का शंखनाद करने वाले गेंदालाल दीक्षित का जन्म 30 नवंबर 1888 को जिला आगरा की तहसील बाह के मई नामक गांव में हुआ था। शिक्षा पूरी करने के बाद वे उत्तर प्रदेश में औरैया जिले की डीएवी विद्यालय में अध्यापक नियुक्त हुए थे। संवाद

190. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 133rd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter & Revolutionary Khudiram Bose on 03.12.2022 and delivered keynote address on “The Brave Fighter Khudiram Bose and Indian Freedom Struggle.”

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 04.12.2022

छोटी उम्र में ही खुदीराम बोस ने ब्रिटिश सरकार को हिला दिया था : डा. अमरदीप

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के आनलाइन कार्यक्रम में बोस को याद किया गया

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डा. रणबीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी खुदीराम बोस की 133वीं जयंती पर आनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में कुछ नौजवानों का बलिदान इतना उद्वेलित करने वाला था कि उसने पूरे देश में स्वतंत्रता संग्राम का रुख बदलकर रख दिया। ऐसा ही एक एक नाम खुदीराम बोस का है उन्होंने महज 18 साल की उम्र में ब्रिटिश सरकार को हिला दिया था और हंसते हंसते फांसी के फंदे पर भी झूल गया था। खुदीराम की लोकप्रियता का यह आलम था कि उनको फांसी दिए जाने के बाद बंगाल के जुलाहे एक खास किस्म की धोती बुनने लगे जिसकी किनारी पर खुदीराम लिखा होता था और बंगाल के नौजवान बड़े गर्व से वह धोती पहनकर आजादी की लड़ाई में कूदने लगे। तीन दिसंबर 1889 को खुदीराम बोस का जन्म बंगाल के मिदनापुर में हुआ था। 15 साल की किशोरावस्था में आज अधिकतर युवा बच्चे खेल के मैदान में समय बिताते हैं। लेकिन किशोर खुदीराम देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़ा और क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति का सदस्य बन गया। एक साल में ही खुदीराम बोस ने बम बनाना सीख लिया था और वे उन्हें पुलिस थानों के बाहर प्लांट भी करने लगा। 1908 में खुदीराम बोस के जीवन में वह निर्णायक पल आया जब उन्हें और दूसरे क्रांतिकारी प्रफुल चाकी को मुजफ्फरपुर के जिला मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की हत्या का काम सौंपा गया। किंग्सफोर्ड की हत्या के पहले कई प्रयास हुए थे लेकिन सब विफल रहे। 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम बोस और उनके साथी ने किंग्सफोर्ड की बग्घी समझकर उसपर बम फेंका जिससे उसमें सवार दूसरे अंग्रेज अधिकारी की पत्नी एवं बेटी की मौत हो गई। बाद में खुदीराम बोस को वैनी रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया गया। 13 जून 1908 को इस मामले में खुदीराम बोस को फांसी की सजा सुनाई गई तो उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। प्रोफेसर जितेंद्र, डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार आदि ने विचार रखे।

15 साल की उम्र में आजादी की लड़ाई में शामिल हुए थे

1908 में फांसी के फंदे पर झूल गए थे

दैनिक भास्कर — झज्जर भास्कर 04-12-2022

महान क्रांतिकारी खुदीराम बोस की 133वीं जयंती मनाई

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी खुदीराम बोस की 133वीं जयंती के अवसर पर एक ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में कुछ नौजवानों का बलिदान इतना उद्वेलित करने वाला था कि उसने पूरे देश में स्वतंत्रता संग्राम का रूख बदलकर रख दिया, ऐसा ही एक एक नाम खुदीराम बोस का है, जिन्होंने महज 18 साल की उम्र में ब्रिटिश सरकार को हिला दिया था और हंसते हंसते फांसी के फंदे पर भी झूल गया था और उसके चेहरे पर मामूली सी भी कोई शिकन नहीं थी। खुदीराम की लोकप्रियता का यह आलम था कि उनको फांसी दिए जाने के बाद बंगाल के जुलाहे एक खास किस्म की धोती बुनने लगे, जिसकी किनारी पर खुदीराम लिखा होता था और बंगाल के नौजवान बड़े गर्व से वह धोती पहनकर आजादी की लड़ाई में कूदने लगे। खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसम्बर 1889 को बंगाल के मिदनापुर में हुआ था। 15 साल की किशोर में खुदीराम देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़ा और क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति का सदस्य बन गया। 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम बोस और उनके साथी ने किंग्स फोर्ड की बग्घी समझकर उस पर बम फेंका, जिससे उसमें सवार दूसरे अंग्रेज अधिकारी की पत्नी एवं बेटी की मौत हो गई। वे दोनों यह सोचकर भाग निकले कि किंग्स फोर्ड मारा गया है।

अमर उजाला, झज्जर 04.12.2022

खुदीराम बोस ने 18 साल की उम्र में फांसी के फंदे को चूमा थाः अमरदीप

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी खुदीराम बोस की 133 वीं जयंती के अवसर पर एक ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में कुछ नौजवानों का बलिदान इतना उद्वेलित करने वाला था कि उसने पूरे देश में स्वतंत्रता संग्राम का रूख बदलकर रख दिया, ऐसा ही एक एक नाम खुदीराम बोस का है, जिन्होंने महज 18 साल की उम्र में ब्रिटिश सरकार को हिला दिया था और हंसते हंसते फांसी के फंदे पर भी झूल गया था और उसके चेहरे पर मामूली सी भी कोई सिकन नही थी। 13 जून 1908 को इस मामले में खुदीराम बोस को फांसी की सजा सुनाई गई तो उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। स्वंतंत्रता आंदोलन को शहीद खुदीराम बोस ने एक नई क्रांतिकारी दिशा दी। संवाद

191. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 67th Mahaparinirvana Daiwas of Great Freedom Fighter Baba Saheb Dr. Bhimrao Ambedkar on 06.12.2022 and delivered keynote address on "Legacy of Dr. Ambedkar."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 07.12.2022

आंबेडकर ने समानता के सिद्धांत पर किया राष्ट्र निर्माण

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में डा. भीमराव आंबेडकर को याद किया

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय मे छात्रों को संबोधित करते डा. अमरदीप।

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्य डा. रणबीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी डा. भीमराव अंबेडकर के 67वें महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि डा. अंबेडकर ने समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांत पर आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव को लेकर फैली बुराइयों को दूर करने में अहम भूमिका निभाई है। 14 अप्रैल 1891 में मध्यप्रदेश के इंदौर के पास महू में रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई के घर में जन्मे भीमराव अंबेडकर बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के स्वामी थे। जिसके बलबूते पर उन्होंने सभी कठिनाइयों को पार करते हुए उन्होंने अमेरिका, ब्रिटेन जैसे देशों उच्च शिक्षा हासिल करके एक सामान्य मानव की क्षमता को चरितार्थ किया। वे एक मनीषी, विद्वान, दार्शनिक, इतिहासकार, राजनेता और धैर्यवान व्यक्तित्व के स्वामी थे जिनसे आज हर नागरिक को सीख लेने की जरूरत है।

डा. अंबेडकर ने संविधान निर्माण में अदम्य एवं अद्वितीय प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए स्वतंत्रता संग्राम के सभी बिंदुओं को समाहित करते हुए आधुनिक भारत की स्थापना एवं गुलामी मुक्त जीवन यापन की शुरुआत की नींव डाली जिस पर चलते हुए आज भारत दुनिया की सबसे ताकत बनने की ओर अग्रसर होने जा रहा है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. रणबीर सिंह आर्य ने कहा कि डा. अंबेडकर का जीवन राष्ट्र को समर्पित था। इस कार्यक्रम में इतिहास प्रोफेसर सवीन, जितेन्द्र, अजय सिंह और भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

नांधा के आदर्श स्कूल में कार्यक्रम आयोजित

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव नांधा के आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में मंगलवार को डा. भीमराव अंबेडकर की पुण्यतिथि पर उनके चित्र पर फूल अर्पित कर उन्हें नमन किया।

संस्था के निदेशक कुलदीप सांगवान, निदेशक मांगेराम जाखड़ व प्रधानाचार्य मंदीप कादयान ने बताया कि छह दिसंबर 1956 को बाबा साहेब अंबेडकर का देहावसान हुआ था।

संविधान निर्माता डा. भीमराव अंबेडकर बड़े समाज सुधारक और विद्वान थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन जातिवाद को खत्म करने और गरीबों पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए अर्पित किया। इसलिए आज के दिन उनकी पुण्यतिथि को देश भर में महापरिनिर्वाण दिवस के तौर पर मनाया जाता है। अंबेडकर ने वर्ष 1956 में बौद्ध धर्म अपनाया था। इसके अलावा परिनिर्वाण बौद्ध धर्म के प्रमुख सिद्धांतों और लक्ष्यों में से एक है।

इस अवसर पर उप प्रधानाचार्य विनोद कुमार, विनोद शर्मा, बलवान, विकास, शकुन्तला, सीमा, सरोज, एक्टिविटी इंचार्ज मेनका, बबीता, जयश्री, उषा, सुप्रिता, कविता, मंजीता इत्यादि उपस्थित रहे।

गांव नांधा के आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मे डा. अंबेडकर को नमन करते छात्र, शिक्षक। ● हिप्र

अमर उजाला, चरखी दादरी 07.12.2022

आंबेडकर का अहम योगदान : डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी डॉ. भीमराव आंबेडकर के 67वें महापरिनिर्वाण दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य रणबीर सिंह ने की। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि डॉ. आंबेडकर ने समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांत पर आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव को लेकर फैली बुराइयों को दूर करने में उनका अहम योगदान रहा। कार्यक्रम में इतिहास प्रोफेसर सवीन, जितेंद्र, अजय सिंह और भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार उपस्थित रहे।

अमर उजाला, झज्जर 07.12.2022

बाबा साहेब के आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया

डॉ बीआर आंबेडकर के बार में जानकारी देते हुए डॉ. अमरदीप सिंह। संवाद

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी डा भीमराव आंबेडकर के 67 वें महापरिनिर्वाण दिवस पर उन्हें याद किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा अमरदीप ने कहा कि डा आंबेडकर ने समानता, स्वतंत्रता और बन्धुत्व के सिद्धांत पर आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव को लेकर फैली बुराइयों को दूर करने में अहम भूमिका निभाई है। 14 अप्रैल 1891 में मध्यप्रदेश के इंदौर के पास महू में रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई के घर में जन्मे भीमराव आंबेडकर बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के स्वामी थे।कार्यक्रम के अध्यक्ष डा रणवीर सिंह आर्य ने कहा कि डा अम्बेडकर का जीवन राष्ट्र को समर्पित था और प्रत्येक भारतवासी को उनसे प्रेरणा लेने की जरुरत है। इस कार्यक्रम में इतिहास प्रोफेसर सवीन, जितेंद्र, अजय सिंह और भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे। संवाद

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 07-12-2022

डॉ. भीमराव अंबेडकर का 67वां महा परिनिर्वाण दिवस मनाया

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज़ | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी डॉ. भीमराव अम्बेडकर के 67वें महा परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि डॉ. अंबेडकर ने समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांत पर आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव को लेकर फैली बुराइयों को दूर करने में अहम भूमिका निभाई है। 14 अप्रैल 1891 में मध्यप्रदेश के इंदौर के पास महू में रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई के घर में जन्मे भीमराव अंबेडकर बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के स्वामी थे। जिसके बलबूते पर उन्होंने सभी कठिनाइयों को पार करते हुए अमेरिका, ब्रिटेन जैसे देशों उच्च शिक्षा हासिल करके एक सामान्य मानव की क्षमता को चरितार्थ किया। वे एक मनीषी, विद्वान, दार्शनिक, इतिहासकार, राजनेता और धैर्यवान व्यक्तित्व के स्वामी थे जिनसे आज हर नागरिक को सीख लेने की जरूरत है। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. रणवीर सिंह आर्य ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर का जीवन राष्ट्र को समर्पित था और प्रत्येक भारतवासी को उनसे प्रेरणा लेने की जरूरत है। इस कार्यक्रम में इतिहास प्रोफेसर सवीन, जितेन्द्र, अजय सिंह और भूगोल प्रोफेसर पवन उपस्थित रहा।

192. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 75th Death Anniversary of Great Freedom Fighter & Revolutionary Bhai Parmanand on 09.12.2022 and delivered keynote address on "Role of Bhai Parmanand in Freedom Struggle."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 10.12.2022

क्रांतिकारियों की प्रेरणा के स्रोत थे भाई परमानन्द

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणबीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी भाई परमानंद की 75वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि भाई परमानंद ऐसे क्रांतिकारी एवं देश प्रेमी थे जिनसे करतार सिंह सराभा, भगत सिंह, सुखदेव जैसे क्रांतिकारियों ने प्रेरणा ली थी।

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय मे छात्रों को संबोधित करते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

1876 में पंजाब के करियाला गांव में जन्मे परमानंद ने डीएवी कालेज लाहौर और पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से अपनी शिक्षा पूरी की थी। वे आरंभ में ही आर्य समाज के नेता लाला लाजपत राय और महात्मा हंसराज के प्रभाव में आ गए थे। डीएवी कालेज में अध्यापन कार्य करने के साथ ही वे आर्य समाज का प्रचार भी करते रहे। 1905 में वे दक्षिण अफ्रीका गए और वहां आर्य समाज की शाखा स्थापित की। इस बीच भारत वापसी के बाद 1908 में उन्होंने उर्दू में तवारिखे उर्दू नामक भारत के इतिहास की पुस्तक लिखी। जिसे ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया। हालांकि गिरफ्तार नहीं किया लेकिन उनसे जमानत देने को कहा गया। इस पर भाई परमानंद ने भारत छोड़ दिया और अनेक देशों की यात्रा करते हुए कैलिफार्निया, अमेरिका जा पहुंचे। वहां उन्होंने लाला हरदयाल के साथ मिलकर गदर पार्टी की स्थापना एवं गदर आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेंद्र इत्यादि ने भी अपने विचार रखे।

अमर उजाला, झज्जर 10.12.2022

जयंती पर क्रांतिकारी शहीद परमानंद को किया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर कॉलेज में कार्यक्रम का आयोजन

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी भाई परमानंद की 75 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि भाई परमानंद वो देशप्रेमी थे जिनसे करतार सिंह सराभा, भगत सिंह, सुखदेव जैसे क्रांतिकारियों ने प्रेरणा ली थी। 1876 में पंजाब के करियाला गांव में जन्मे परमानंद ने डीएवी कॉलेज, लाहौर और पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर से अपनी शिक्षा पूरी की थी। वे आरम्भ में ही आर्य समाज के नेता लाला लाजपत राय और महात्मा हंसराज के प्रभाव में आ गये थे। डी.ए.वी. कॉलेज में अध्यापन कार्य करने के साथ ही वे आर्य समाज का प्रचार भी करते रहे। 1905 में वे दक्षिण अफ्रीका गये और वहां आर्य समाज की शाखा स्थापित की।

उन्होंने लाला हरदयाल के साथ मिलकर ग़दर पार्टी का स्थापना एवं गदर आंदोलन चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परमानंद के लेख युवकों को सशस्त्र क्रांति एवं 1857 के गदर की पुनरावृति के लिए प्रेरित करते थे। आजादी मिलने के पश्चात 8 दिसंबर 1947 को उनका निधन हो गया परन्तु उनका समपूर्ण जीवन राष्ट्र प्रेम और देशभक्ति को समर्पित रहा और उनके जीवन से असंख्य युवाओं ने प्रेरणा लेकर देशहित में लगे।

193. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 133rd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter C. Rajagopalachari on 10.12.2022 and delivered keynote address on "Freedom Struggle in South India and Contribution of C. Rajagopalachari."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 11.12.2022

सी. राजगोपालाचारी की जयंती पर पौधारोपण किया

चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में पौधारोपण करते स्टाफ सदस्य।

जासं, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी सी. राजगोपालाचारी की 144वीं जयंती के अवसर पर पौधारोपण अभियान चलाया गया। डा. अमरदीप, जितेंद्र, पवन कुमार, प्रदीप कुमार, डा. रीना एवं दीपक ने त्रिवेणी लगाई। उन्होंने कहा कि सी. राजगोपालचारी ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

194. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 134th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter & Revolutionary Prafulla Chaki on 12.12.2022 and delivered keynote address on "Prafulla Chaki & Revolutionary Movement in Colonial India."

अमर उजाला, झज्जर 13.12.2022

प्रफुल्लचंद्र चाकी क्रांतिकारी आंदोलन के थे चमकते सितार : डॉ. अमरदीप

राजकीय महाविद्यालय में जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में दिया व्याख्यान

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी प्रफुल्लचंद्र चाकी के 134 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि प्रफुल्लचंद्र चाकी क्रांतिकारी आन्दोलन के चमकते सितारे थे। भारत की आजादी के लिए मात्र 19 वर्ष की आयु में सर्वोच्च्य बलिदान देकर प्रफुल्ल चाकी युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बन गये थे। प्रफुल्लचंद्र चाकी का जन्म 10 दिसंबर, 1888 को बंगाल में हुआ था और 15 साल की आयु में प्रफुल्ल चाकी ने स्वदेशी आन्दोलन में भाग लिया और क्रांतिकारी संगठन 'जुगांतर' पार्टी के सदस्य बन गये। 1905 के बंगाल विभाजन के बाद ब्रिटिश अधिकारी किसी भी भारतीय नेता या फिर क्रांतिकारी को अपमानित और शोषण करने का कोई मौका नहीं छोड़ते थे और इनमे ऐसे ही क्रूर अधिकारियों की सूची में कलकत्ता का चीफ़ प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड का नाम भी शामिल था। क्रांतिकारी युवाओं ने ब्रिटिश शोषण का जवाब देने और किंग्स्फोर्ड को ख़त्म करने का काम खुदीराम बोस व प्रफुल्ल चाकी को सौंपा। 30 अप्रैल 1908 को किंग्स्फोर्ड के यूरोपियन क्लब जाने की सूचना इन दोनों क्रांतिकारियों को मिली और किंग्स्फोर्ड के क्लब से बाहर निकलते ही उसकी बग्घी पर बम फेंक दिया।

छात्राओं को जानकारी देते डॉ अमरदीप। संवाद

हालांकि, खुदीराम और प्रफुल्ल को लगा कि उन्होंने किंग्स्फोर्ड को मार दिया है, परन्तु उस बग्घी में किंग्स्फोर्ड नहीं बल्कि अन्य दो ब्रिटिश महिलाएं बैठी हुई जो इसमें मारी गई। बम फेंकने के तुरंत बाद दोनों क्रांतिकारी घटनास्थल से निकलने में कामयाब रहे और प्रफुल्ल ने समस्तीपुर पहुँच कर कपड़े बदले और टिकट ख़रीद कर ट्रेन में बैठ गए। उसी डिब्बे में बैठे एक पुलिस अधिकारी को प्रफुल्ल को गिरफ्तार करने बारे में सूचना अगले स्टेशन पर भेज दी। 1 मई 1908 को स्टेशन जब प्रफुल्ल ने देखा कि वे चारों ओर से घिर गए हैं, तो उन्होंने अपनी रिवाल्वर से खुद को ही गोली मारकर शहादत की वो मिसाल पेश की जैसी चंद्रशेखर आजाद ने दी थी। इस जितेन्द्र, पवन कुमार उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 13.12.2022

बिरहोड़ के सरकारी कालेज में क्रांतिकारी प्रफुल्लचंद्र चाकी को गोष्ठी कर किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी प्रफुल्लचंद्र चाकी के 134वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि प्रफुल्लचंद्र चाकी क्रांतिकारी आंदोलन के चमकते सितारे थे। भारत की आजादी के लिए मात्र 19 वर्ष की आयु में सर्वोच्च बलिदान देकर प्रफुल्ल चाकी युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बन गए थे। प्रफुल्लचंद्र चाकी का जन्म 10 दिसंबर, 1888 को बंगाल में हुआ था और 15 साल की आयु में प्रफुल्ल चाकी ने स्वदेशी आंदोलन में भाग लिया। वे क्रांतिकारी संगठन जुगांतर पार्टी के सदस्य बने। 1905 के बंगाल विभाजन के बाद ब्रिटिश अधिकारी किसी भी भारतीय नेता या फिर क्रांतिकारी को अपमानित और शोषण करने का कोई मौका नहीं छोड़ते थे। इनमें ऐसे ही क्रूर अधिकारियों की सूची में कलकत्ता का चीफ प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड का नाम भी शामिल था। क्रांतिकारी युवाओं ने ब्रिटिश शोषण का जवाब देने और किंग्स्फोर्ड को खत्म करने का काम खुदीराम बोस व प्रफुल्ल चाकी को सौंपा। 30 अप्रैल 1908 को किंग्स्फोर्ड के यूरोपियन क्लब जाने की सूचना इन दोनों क्रांतिकारियों को मिली और किंग्स्फोर्ड के क्लब से बाहर निकलते ही उसकी बग्घी पर बम फैंक दिया। बम फैंकने के तुरंत बाद दोनों क्रांतिकारी घटनास्थल से निकलने में कामयाब रहे। प्रफुल्ल ने समस्तीपुर पहुंच कर कपड़े बदले और टिकट खरीद कर ट्रेन में बैठ गए। उन्होंने अपनी रिवाल्वर से खुद को ही गोली मारकर बलिदान दिया। इस अवसर पर जितेंद्र, पवन कुमार भी उपस्थित रहे।

कालेज मे स्वतंत्रता सेनानी प्रफुल्लचंद्र चाकी के बारे मे बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

195. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 130th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter & Revolutionary Woman Rukmani Lakshmipati on13.12.2022 and delivered keynote address on “Rukmani Lakshmipati: Unknown Warrior of Indian Freedom Struggle.”

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 14.12.2022

सत्याग्रह में लक्ष्मीपति जेल जाने वाली पहली महिला

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी रुक्मिणी लक्ष्मीपति के 130वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि 1930 में मद्रास प्रेसीडेंसी में नमक सत्याग्रह के दौरान रुक्मिणी लक्ष्मीपति जेल जाने वाली पहली महिला थी। भारत के स्वाधीनता संघर्ष में हर वर्ग और समुदाय ने बराबरी के साथ अंग्रेजी हुकूमत से टक्कर ली थी।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज मे विद्यार्थियों को स्वतंत्रता सेनानी रुक्मिणी लक्ष्मीपति के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

महिलाओं का योगदान भी इसमें पीछे नहीं रहा है। 1920 से महिलाओं ने आजादी के आंदोलन में भाग लेने में वृद्धि दिखाई पड़ती है। इसी आंदोलन की एक वीरांगना रुक्मिणी लक्ष्मीपति थी। जिसने मद्रास प्रेसिडेंसी में अंग्रेजों के शासन के खिलाफ बड़े बड़े आंदोलनों में सक्रिय भागेदारी की थी। 6 दिसंबर 1892 में जन्मी रुक्मिणी लक्ष्मीपति स्वतंत्र विचारों की महिला थीं और मद्रास के प्रसिद्ध वूमन क्रिश्चियन कालेज के पहले सत्र की स्नातक थीं। कालांतर में उन्होंने डाक्टर अर्चंत लक्ष्मीपति जो स्वयं विधुर थे उनसे अंतरजातीय विवाह किया। 1930 में महात्मा गांधी ने दांडी मार्च के माध्यम से नमक सत्याग्रह एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ किया। कार्यक्रम में जितेंद्र, पवन कुमार इत्यादि प्रोफेसर भी उपस्थित रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 14.12.2022

सत्याग्रह में जेल गई थीं रुक्मिणी लक्ष्मीपति

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला में मंगलवार को बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें महान स्वतंत्रता सेनानी रुक्मिणी लक्ष्मीपति को 130वीं जयंती पर याद किया गया। कार्यक्रम का आयोजन प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन हुआ। कार्यक्रम संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने बताया कि रुक्मिणी लक्ष्मीपति वर्ष 1930 में मद्रास प्रेसीडेंसी में नमक सत्याग्रह के दौरान जेल जाने वाली वह पहली महिला थीं। स्वाधीनता संग्राम में उन्होंने आगे बढ़कर हिस्सा लिया। इस दौरान प्रोफेसर जितेंद्र व पवन कुमार मौजूद रहे। संवाद

न्यूज डायरी

अमर उजाला, झज्जर 14.12.2022

बिरोहड़ कालेज में विस्तृत व्याख्यान का आयोजन

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी रुक्मिणी लक्ष्मीपति के 130 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि 1930 में मद्रास प्रेसीडेंसी में नमक सत्याग्रह के दौरान रुक्मिणी लक्ष्मीपति जेल जाने वाली पहली महिला थी। भारत के स्वाधीनता संघर्ष में हर वर्ग और समुदाय ने बराबरी के साथ अंग्रेजी हुकूमत से टक्कर ली थी।1930 में महात्मा गांधी ने दांडी मार्च के माध्यम से नमक सत्याग्रह एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ किया। अपने इन प्रयासों के क्रम में उन्होंने बाल विवाह का निषेध करने जैसे सामाजिक सुधारों के लिए आवाज उठाई। इस कार्यक्रम में जितेंद्र, पवन कुमार इत्यादि प्रोफेसर उपस्थित रहे। संवाद

196. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 72nd Death Anniversary of Great Freedom Fighter Sardar Vallabhbhai Patel on 14.12.2022 and delivered keynote address on “Contribution of Sardar Vallabhbhai Patel in Indian Freedom Struggle.”

अमर उजाला, चरखी दादरी 15.12.2022

‘सरदार पटेल ने रखी अखंड भारत की नींव’

राजकीय महाविद्यालय में सरदार पटेल की 72वीं पुण्यतिथि मनाई

संवाद न्यूज एजेंसी

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में छात्रों को संबोधित करते प्राध्यापक। संवाद

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी सरदार वल्लभ भाई पटेल की 72वीं पुण्यतिथि मनाई गई। स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणबीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि सरदार पटेल ने आधुनिक एवं अखंड भारत की नींव रखी। आजादी के समय भारत की स्थिति बहुत गंभीर थी क्योंकि आजादी तो मिलने वाली थी परंतु भारत में कितने देश आजाद होंगे ये कुछ भी स्पष्ट नहीं था। देशी रियासतों की संख्या 562 थी जिनमें से अधिकतर नये देश के रूप में स्वतंत्र होने के स्वप्न देख रहे थे। तत्कालीन समय ऐसा आ गया था कि आजादी के एक लंबे संग्राम का अंत दुखदायी प्रतीत हो रहा था। तब सरदार वल्लभ भाई पटेल की कुशलता ने इन 562 रियासतों को एक सूत्र में पिरोया। इसलिए इतिहास में सरकार पटेल को भारत का लौह पुरुष, राष्ट्रीय एकीकरण के शिल्पकार, आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में जाना जाता है। 31 अक्टूबर 1875 में गुजरात के एक सामान्य किसान परिवार में जन्में वल्लभ भाई ने इंग्लैंड में जाकर बैरिस्टर की परीक्षा पास की थी। खेड़ा सत्याग्रह और बारदोली आंदोलन ने वल्लभ भाई को भारतीय राजनीति में नई पहचान दिलवाई। प्रोफेसर पवन ने कहा कि यह सरदार पटेल का ही दूरदर्शिता थी कि भारतीय प्रशासनिक सेवाएं देश को एक रखने में अहम भूमिका निभाएगी।

197. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 119th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter & Revolutionary Bhagwati Charan Vohra on 15.12.2022 and delivered keynote address on “Bhagwati Charan Vohra: Think Tank of Revolutionary Movement.”

अमर उजाला, झज्जर 16.12.2022

श्रद्धांजलि

बिरोहड़ कॉलेज में जयंती पर किया गया पौधरोपण

‘क्रांतिकारी आंदोलन के थिंक टैंक थे भगवती चरण वोहरा’

संवाद न्यूज एजेंसी

बिरोहड़ कॉलेज में पौधरोपण करते हुए प्राध्यापक। संवाद

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी भगवती चरण वोहरा की 119 वीं जयंती के अवसर पर एक पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, जितेंद्र, दीपक और विद्यार्थियों द्वारा पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि भगवती चरण वोहरा वह महान क्रांतिकारी थे जिनके बलिदान के सामने भगत सिंह भी अपने त्याग को तुच्छ मानते थे।

भगवती चरण वोहरा के बलिदान पर भगत सिंह के शब्द थे, 'हमारे तुच्छ बलिदान उस श्रृंखला की कड़ी मात्र होंगी, जिसका सौंदर्य कॉमरेड भगवतीचरण वोहरा के आत्मत्याग से निखर उठा है।' 1903 में पंजाब में जन्मे भगवती चरण क्रांतिकारी आंदोलन के थिंक टैंक माने जाते थे। वह आंदोलन के लेखक, विचारक, संगठक, सिद्धांतकार व प्रचारक थे और काकोरी से लाहौर तक कई क्रांतिकारी कार्रवाइयों के अभियुक्त होने के बावजूद वह न कभी पुलिस द्वारा पकड़े जा सके और न ही किसी अदालत ने उन्हें कोई सजा सुनाई। यह उनका अनुशासन था कि उन्होंने कभी भी पकड़े जाने के डर से उक्त कार्रवाइयों में अपनी भागीदारी नहीं रोकी और अपराजेय आदर्शनिष्ठा, प्रतिबद्धता, साहस और मनोयोग से आखिरी सांस तक भारत माता की मुक्ति के लक्ष्य के प्रति समर्पित रहे।

महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन के वापस लिए जाने पर उन्होंने लाहौर के उसी नेशनल कॉलेज से बीए किया, जहां वह 'राष्ट्र की परतंत्रता और उससे मुक्ति के प्रश्न' पर स्टडी सर्किल चलाते थे और भगत सिंह व सुखदेव जिसके प्रमुख सदस्य थे। भगत सिंह और भगवती चरण ने साथ मिलकर नौजवान भारत सभा बनाई। वे अपने साथियों में 'भाई' के रूप में प्रसिद्ध थे। 28 मई 1930 को भगवती चरण, यशपाल और सुखदेव राज ने रावी नदी के तट पर बम का परीक्षण करने का निर्णय लिया। दुर्भाग्य से बम भगवती चरण के हाथों में फट गया और वह शहीद हो गये। शहादत पर उनके आखिरी शब्द थे कि उन्हें भगत सिंह व अन्य साथियों को छुड़ा नहीं पाने का मलाल रहेगा। परंतु इसमें किसी अन्य साथी का कोई नुकसान नहीं हुआ, इसके लिए उन्हें खुशी थी। आजाद भारत आज भी उनके बलिदान और त्याग के सामने नतमस्तक है। इस अवसर पर इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र, दीपक एवं अन्य विद्यार्थी इत्यादि उपस्थित रहे।

198. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 119th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter & Revolutionary Yashpal on 16.12.2022 and delivered keynote address on "Yashpal and Revolutionary Movement in Colonial India."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 17.12.2022

बम बनाने में एक्सपर्ट थे भगतसिंह, चंद्रशेखर के साथी क्रांतिकारी यशपाल : डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी यशपाल की 119वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि भगत सिंह, सुखदेव और चंद्रशेखर आजाद के करीबी क्रांतिकारी साथी यशपाल का जन्म 1903 में वर्तमान हिमाचल के एक परिवार में हुआ था। 17 वर्ष की आयु में यशपाल महात्मा गांधी के अनुयायी बनकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े थे, लेकिन आंदोलन की वापसी ने यशपाल सहित अनेक युवाओं की भावनाओं को तोड़ दिया। बंदूक और बम से क्रांति का प्रण लेने लगे थे। नेशनल कालेज लाहौर में प्रवेश लेने के बाद यशपाल की मुलाकात भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव थापर सरीखे नौजवानों से हुई। यही कालेज पंजाब में क्रांतिकारियों का अड्डा बना। यशपाल ने 1928 में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस एसोसिएशन में यशपाल बम बनाने में एक्सपर्ट हो गए थे। भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि क्रांतिकारियों की गिरफ्तारी के बाद क्रांतिकारी आंदोलन में जान डालने के लिए यशपाल ने 23 दिसंबर 1929 को ब्रिटिश वायसराय लार्ड इरविन को ले जा रही ट्रेन में विस्फोट किया। हालांकि लार्ड इरविन बच गए। चंद्रशेखर आजाद की शहादत के बाद यशपाल ने एसोसिएशन को संभाला और कमांडर इन चीफ बने। 1932 में यशपाल को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें 14 साल की कड़ी सजा हुई। वे एक ऐसे क्रांतिकारी थे जिनकी 1936 में जेल में ही शादी हुई।

चरखी दादरी के गांव बिरोहड़ कालेज में स्वतंत्रता सेनानी यशपाल की 119वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेतीं छात्राएं। ● विज्ञप्ति।

अमर उजाला, झज्जर 17.12.2022

जयंती पर स्वतंत्रता सेनानी यशपाल को किया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी यशपाल की 119 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि भगत सिंह, सुखदेव और चंद्रशेखर आजाद का करीबी क्रांतिकारी साथी यशपाल का जन्म 1903 में वर्तमान हिमाचल प्रदेश के एक गरीब परिवार में हुआ था। 17 वर्ष की आयु में यशपाल महात्मा गांधी का अनुयायी बनकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद गए थे। 1932 में यशपाल को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें 14 साल की कड़ी सजा हुई। यशपाल शायद एकमात्र ऐसे क्रांतिकारी थे जिनकी 1936 में जेल में ही शादी हुई। उन्होंने 1939 में पहली रचना ''पिंजरे की उड़ान'' लिखी। 1941 में अपनी पत्रिका ''विप्लव'' का प्रकाशन शुरू किया।

199. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 95th Martyrdom of Great Freedom Fighter & Revolutionary Ashfaqulla Khan on 12.12.2022 and delivered keynote address on “Prafulla Chaki and Revolutionary Movement in Colonial India.”

अमर उजाला, झज्जर 21.12.2022

शहीदी दिवस पर किया पौधरोपण

बिरोहड़ के राजकीय कॉलेज में पौधरोपण करते प्राध्यापक। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी अशफाक उल्ला खां के 95वें शहीदी दिवस के मौके पर पौधरोपण किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि अशफाक उल्ला खान जंगे-ए-आजादी के महान योद्धा थे। 22 अक्तूबर 1900 को उतरप्रदेश के शाहजहांपुर जिले के जलालनगर में जन्मे अशफाक उल्ला खान बचपन से देश के प्रति कुछ करने का जज्बा था। यही जज्बा उन्हें रामप्रसाद बिस्मिल के क्रांतिकारी संगठन मातृवेदी तक लेकर आया और उसके बाद उनकी सक्रियता ने इतिहास में अशफाक का नाम अमर कर दिया। अशफाक उल्ला खां एक बेहतरीन उर्दू शायर एवं कवि थे। अपने तखल्लुस (उपनाम) ‘वारसी’ और ‘हसरत’ से वह उर्दू शायरी और गजलें लिखते थे। अपने अंतिम दिनों में उन्होंने कुछ बहुत प्रभावी पंक्तियां लिखीं, जो उनके बाद स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे लोगों के लिए मार्गदर्शक साबित हुईं। ब्रिटिश हुकूमत ने उन्हें फांसी दी।

200. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 54th Death Anniversary of Great Freedom Fighter & Revolutionary Sohan Singh Bhakna on 21.12.2022 and delivered keynote address on “Sohan Singh Bhakna and Revolutionary Movement in America.”

200 वां कार्यक्रम - अमर उजाला, झज्जर 22.12.2022

पुण्यतिथि राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भकना की जयंती पर व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित

सोहन सिंह भकना ने किया था क्रांतिकारियों को एकजुट

संवाद न्यूज एजेंसी

बिरोहड कॉलेज में सोहन सिंह भकना पर व्याख्यान देते डॉ. अमरजीत। संवाद

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोतर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी सोहन सिंह भकना की 54 वीं पुण्यतिथि मनाई गई।

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि अमेरिका में भारतीय क्रांतिकारियों को एकजुट करने में सोहन सिंह भकना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्रांतिकारी सोहन सिंह भकना का जन्म 4 जनवरी, 1870 को पंजाब के अमृतसर जिले के खुतराई खुर्द गांव में हुआ था। वह 1907 में अमेरिका पहुंचे और वहां पर उन्हें एक मिल में कार्य करने लगे। परन्तु अमेरिका में भारतीयों के साथ बुरा बर्ताव किया जाता था और इसका कारण भारत पर ब्रिटिश गुलामी का शिकंजा था इसलिए उन्होंने वहां पर अंग्रेजों की गुलामी से आजादी पाने के लिए लोगों को संगठित करना शुरू किया। भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम,1857 की स्मृति में 'गदर' नामक एक समाचार पत्र प्रकाशित किया। इस पत्र के कारण ही इस संगठन का नाम 'गदर पार्टी' किया गया। इस पार्टी के जरिए सोहन सिंह ने क्रांतिकारियों को संगठित करने और अस्त्र-शस्त्र एकत्रित करने के लिए का बीड़ा उठाया। पगदर आंदोलन के माध्यम से देश को आजाद कराने की कोशिश करने वाले क्रांतिकारी बाबा सोहन सिंह भकना का 20 दिसम्बर, 1968 को अमृतसर में निधन हो गया। मौके पर प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र इत्यादि प्राध्यापक उपस्थित रहे।

200 वां कार्यक्रम - अमर उजाला, चरखी दादरी 22.12.2022

क्रांतिकारी सोहन की 54वीं पुण्यतिथि मनाई

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी सोहन सिंह भटकना की 54वीं पुण्यतिथि मनाई गई। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप रहे। उन्होंने कहा कि अमेरिका में भारतीय क्रांतिकारियों को एकजुट करने में सोहन सिंह भकना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्रांतिकारी सोहन सिंह भकना का जन्म चार जनवरी 1870 में पंजाब के अमृतसर के खुतराई खुर्द गांव में हुआ था। उन्होंने अंग्रेजों की गुलामी से आजादी पाने के लिए लोगों को संगठित किया। संवाद